मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश –

• निमाड़ का फारूकी वंश –

संस्थापक – म लक अहमद रज़ा

समय अव ध – 1398 – 1601 ई

यह मध्य प्रदेश में मध्यकालीन युग के प्रमुख मुस्लिम राजवंशों में से एक है। शासक क्षेत्र खानदेश था और राजधानी बुरहानपुर थी। इस राजवंश का नाम खलीफा-उमर-फारुख के नाम पर रखा गया था क्यों क उसने म लक अहमद रज़ा के शासन को मान्यता दी थी।

1382 में फरोज शाह तुगलक ने म लक अहमद रजा को थलनेर और करोंद का गवर्नर नियुक्त कया। बाद में 1398 में, जब तैमूर ने भारत पर आक्रमण कया, तो म लक ने अवसर को जब्त कर लया और निमाड़ में स्वतंत्र फारूकी साम्राज्य की स्थापना की।

इस वंश के कुछ प्रमुख शासक हैं -

म लक अहमद रज़ा -

समयाव ध – 1398 – 1399 ई

वे इस वंश के संस्थापक थे। अपने राज्य को मजबूत करने के लए, उसने अपने बेटे (म लक ना सर) की शादी सूबेदार दिलावर खान गोरी की बेटी से की और दिलावर खान (अल्प खान) के बेटे, जिसे हुशंग शाह के नाम से जाना जाता है, की शादी म लक अहमद रजा की बेटी से हुई थी।

1399 में, उनकी मृत्यु हो गई और उनके बेटे म लक ना सर ने उनका उत्तरा धकारी बना लया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

म लक ना सर -

समयाव ध – 1399 – 1437 ई

वह शेख जैन-उद-दीन के शष्य थे। अपनी स्थिति को मजबूत करने के लए, उसने खानदेश के असीरगढ़ कले को धोखे से जीत लया। अपने शक्षक शेख जैन-उद-दीन की सलाह पर, उन्होंने एक शहर का नाम जैनाबाद रखा और बुरहानपुर का नाम सूफी संत शेख बुरहान-उद-दीन के नाम पर रखा गया। उनके शासन के बाद के वर्ष में बुरहानपुर को राजधानी बनाया गया था।

उसने गुजरात के सुल्तान म लक ना सर को खान की उपा ध दी। इस प्रकार उनके शासन क्षेत्र को खानदेश के नाम से भी जाना जाता था।

वह सफल हुआ

आदिल खान द् वतीय –

समयाव ध – 1457 – 1501 ई

वह फारूकी वंश का एक महत्वाकांक्षी शासक था। उन्होंने असीरगढ़ कले में बुरहानपुर कला और चाहरदेवी का निर्माण कया।

उसके शासनकाल में बुरहानपुर एक व्यापार केंद्र के रूप में फला-फूला। सैय्यद कमाल-उद-दीन और मौलाना शाह बुखारी उनके संरक्षण में थे।

नोट - उनकी मृत्यु के बाद गुजरात के महमूद बेगड़ा शासक ने अहमद खान को आदिल खान III के शीर्षक के तहत अगले शासक के रूप में रखा, जिन्होंने 1520 ईस्वी तक शासन कया।

मरीन मोहम्मद शाह -

समयाव ध – 1520 – 1537 ई

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

वह आदिल खान तृतीय का उत्तरा धकारी था। उन्होंने गुजरात और मालवा के क्षेत्र में हुमायूँ के आक्रमण के दौरान गुजरात के शासक बहादुर शाह की सहायता की। उन्होंने बहादुर शाह की बहन से शादी की।

इस बीच, रुकैया बेगम ने बुरहानपुर में बीबी की मस्जिद के नाम से जामा मस्जिद का निर्माण कया।

मरीन मुबारक शाह -

समयाव ध – 1537 – 1566 ई

उनके शासनकाल के दौरान, मालवा में मुगल आक्रमण अपने चरम पर था और बाज बहादुर ने मरीन मुबारक शाह के संरक्षण में शरण ली। निमाड़ क्षेत्र में अकबर द्वारा मुगल आक्रमण के प्रकोप से बचने के लए। मीरीन ने अपनी बेटी की शादी अकबर से कर दी।

अगले दो शासक हसन खान और रजा अली खान थे।

बहादुर शाह –

समय अव ध – 1597 – 1601 ई

वह निमाड़ के फारूकी वंश का अंतिम शासक था। अपने शासनकाल के दौरान अकबर ने असीरगढ़ कले पर वजय प्राप्त की और निमाड़ / खानदेश मुगलों की जेब में चला गया जैसा क पहले उल्लेख कया गया है अकबर ने अपने बेटे दनियाल को खानदेश के गवर्नर के रूप में रखा और इस क्षेत्र का नाम बदलकर 'दंडेश' कर दिया।

YOUR SUCCESS OUR PRIDE
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

• ग्वा लयर/तोमर वंश की रियासत-

संस्थापक – वीर संह देव तोमर

समयाव ध – 1388 – 1526 ई

इस राजवंश की स्थापना 14वीं शताब्दी में तैमूर के आक्रमण के बाद ग्वा लयर और उसके आसपास के क्षेत्र में हुई थी।

इस वंश के कुछ प्रमुख शासक हैं -

वीर संह देव –

समयाव ध – 1388 ई

उन्होंने 1394 के अंत तक एक स्वतंत्र तोमर साम्राज्य की स्थापना की, उन्होंने ग्वा लयर पर कब्जा कर लया। दिल्ली के सुल्तान ना सर-उद-दीन मोहम्मद शाह ने उन्हें हराया था। उसके शासनकाल में होशंगशाह ने ग्वा लयर पर आक्रमण कया। उनकी दो रचनाएँ थीं - वीर संहवलोक और दुर्गाभक्ति तरं गणी।

वक्रम देव - इसके शासन काल में ना सरुद्दीन महमूद के सेनापति मल्लू इकबाल ने ग्वा लयर पर आक्रमण कया। मुरैना से वक्रमदेव का एक शलालेख मला है।

डूंगर देव - वह एक महत्वाकांक्षी तोमर राजा था जिसने दतिया पर हमला कया और कालपी शासक मुबारक खा को हराया। उसे जौनपुर के शासक ने होशंग शाह के खलाफ सहायता प्रदान की थी जिसमें वह वजयी हुआ था ले कन नरवर की लड़ाई में वह महमूद खलजी से हार गया था।

उन्होंने उस युग के दो प्रमुख क वयों को शरण दी -

1. महाक व रैधु- इन्होंने सम्मतगुण तथा पार्श्वपुराण की रचना की।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A Unit of RACE)

2. वष्णुदास - इन्होंने पांडवचरित और स्वर्गारोहण की रचना की।

राजा कीर्तिपाल – उसने बहलोल लोधी (दिल्ली) तथा होशंग शाह शर्की (जौनपुर) के आक्रमणों को सफलतापूर्वक वफल कर दिया।

कल्याणमल्ला - एक और नाम 'भूपमुनि'।

लेख - सुमेल चत्त

उनके शासनकाल के दौरान अन्य उल्लेखनीय क व और उनके लेखक –

- नारायण दास - बिलहंचरित्र
- दामोदर दास - द् वत्रचरित्र
- चतुर्भुज दास - मधुमालती

मान संह-

समयाव ध – 1486 – 1516 ई

वह तोमर वंश के सबसे प्र सद्ध शासकों में से एक थे। उन्होंने गुजरीदेवी से शादी की, जिन्हें 'मृगनयनी' के नाम से भी जाना जाता है। उसने ग्वा लयर कले में गुजरीमहल (महल) और मानमहल (महल) का निर्माण कराया। वह संगीत के एक महान संरक्षक थे क्यों क उन्होंने “मान कोतुहल” नामक संगीत ग्रंथ की रचना की थी।

बैजू बावरा, तानसेन, हरिदास मान संह के दरबारी क व थे, वे बहलोल और सकंदर लोधी के समकालीन थे।

उनके प्र सद्ध मंत्री खेमदास थे।

उनके युग के प्रमुख लेखक और लेख थे -

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

• दामोदर दास - द् वत्रचरित्र

• मा णक - बेताल पचीसी

वक्रमजीत संह - ये राजा मान संह के पुत्र थे। वह संहासन पर बैठा ले कन इब्राहिम लोदी से हार गया और उसने अपना आ धपत्य स्वीकार कर लया।

राम संह अंतिम ज्ञात तोमर शासक थे जिसके बाद मुगलों ने ग्वा लयर की कमान संभाली।

• बघेलखंड की रियासत-

संस्थापक – बीसलदेव बघेल और पाटन, गुजरात के भीमलदेव बघेल।

समयाव ध – 1236 ई

यह मध्ययुगीन मध्य प्रदेश के प्रमुख स्वतंत्र राजवंशों में से एक था। प्रारंभ में बघेल शासकों का संबंध गुजरात के अन्हिलवाड़ा और सोलंकी चालुक्यों से था।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

प्रादे शक वस्तार –

• चौखड़ी, रीवा - (रीवा)

• सोहावल, उछेरा, मुकुंदपुर - (सतना)

• बांधवगढ़

इस रियासत के कुछ प्रमुख शासक हैं -

बीसलदेव और भीमलदेव –

वे भाई हैं, जो गुजरात से आए थे, जिन्होंने शुरू में का लंजर के शासक की सेवा की थी। लोधी सामंतों को मारकर उन्होंने अपनी धूर्तता से गहोरा, चत्रकूट पर अ धकार कर लया। बाद में 1236 में इसी क्षेत्र में बघेल सत्ता की स्थापना हुई। बीसलदेव ने भीमलदेव को यह अ धग्रहित क्षेत्र प्रदान कया और गुजरात वापस चले गए।

भीमलदेव के बाद अनिकदेव (वीरभानुदायकाव्यम रिट नामक लेख में) सफल हुए

बुलारदेव-

समय अव ध – 1353 – 1389 ई

वह एक महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली था क्यों क वह पहला बघेल शासक था जिसने महाराजा धराज की उपा ध धारण की थी। वह फरोजशाह तुगलक का समकालीन था। तारीख-ए- फरोजशाही में उल्लेख है क बुलारदेव ने अपने पुत्र वीरमदेव को अपना उत्तरा धकारी नियुक्त कया था और बाद में उसने जल समा ध के लए गोद ले लया था।

वीरमदेव -

समय अव ध – 1389 – 1438 ई

उसके शासनकाल में बघेल शासकों ने अपने राज्य का वस्तार कैमूर से लेकर द क्षण में बांधवगढ़ तक कया। इस समय बांधवगढ़ हा थयों के लए प्र सद्ध था। तारीख-ए-मुहम्मदशाही में वीरमदेव का शीर्षक "युग का निरम" है।

नीरम ईरानी पहलवान थे।

उसके इब्राहिम शाह शर्की (जौनपुर) से मैत्रीपूर्ण संबंध थे और ना सरुद्दीन महमूद तुगलक से शत्रुता थी। उसका उत्तरा धकारी उसका पुत्र नरहरिदेव हुआ।

RAC'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

नरहरिदेव -

समय अव ध – 1438 – 1470 ई

उसकी जानकारी मसीर-ए-महमूदशाही से मली है।

वीर संह-

समय अव ध – 1500 – 1535 ई

वह गोंड शासक संग्राम शाह और सकंदर लोधी (दिल्ली) के समकालीन एक बहुत अच्छे राजनयिक और शक्तिशाली शासक थे।

उसने बाबर के खलाफ खानवा की लड़ाई में राणा सांगा की मदद की। ले कन युद्ध हार गया था बाबर ने जीत हा सल की और बाबरनामा के अनुसार मुगलों के बघेलों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

वीरभानु बघेल -

समय अव ध – 1535 – 1555 ई

वह हुमायूँ और शेरशाह के समकालीन वीर संह का पुत्र था। क व माधव उनके दरबारी क व थे जैसा क पहले उल्लेख कया गया है क बघेल शासक के मुगल शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे, यह साबित हो गया क्यों क उन्होंने चौसा के युद्ध में हुमायूँ की मदद की थी। शेरशाह वजयी हुआ; वीरभानु भगोड़ा हो गया और उसने कीरत संह (का लंजर) के संरक्षण में शरण ली।

रामचंद्रदेव बघेल -

समय अव ध -1555-1592 ई

वह वीरभानु का पुत्र और अकबर का समकालीन था। उसने बिजली खा से का लंजर कले के अपने अ धकार को बहाल कया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A Unit of RACE) YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

शुरुआत में रामचंद्रदेव बघेल के अकबर के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे, यह इस लए कहा जा सकता है क्यों क 1562 में अकबर ने रामचंद्रदेव को तानसेन को अपने साथ अपने दरबार में ले जाने के लए कहा था, जिसे रामचंद्रदेव मना नहीं कर सकते थे।

गाजी खा का अकबर के साथ कुछ ववाद था और उसे रामचंद्रदेव द्वारा आश्रय दिया गया था जिससे दोनों के बीच ववाद पैदा हो गया ले कन बीरबल ने इसे सुलझा लया।

अकबर की वस्तार नीति के भय से उसने अपनी राजधानी गहोरा से बाँधवगढ़ स्थानान्तरित की।

1569 में, अकबर ने का लंजर पर अ धकार कर लया और 1592 में रामचंद्रदेव की मृत्यु हो गई। वह वीरभद्रदेव (1592-93 ईस्वी) द्वारा सफल हुआ था।

वक्रमाजीत बघेल -

समयाव ध – 1593 – 1602, 1605 – 1624 ई

उसने मुगलों के आ धपत्य को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और अकबर ने बलपूर्वक बांधवगढ़ पर कब्जा कर लया। 1602 में, अकबर ने जिरजोधन (वीरभद्र के अवैध उत्तरा धकारी) को संहासन पर बिठाया। वक्रमजीत ने 1624 तक अपने अ धकार को बहाल करने के बाद तीन साल (1605) तक शासन कया।

अमर संह -

समयाव ध – 1624 – 1640 ई

उसका शासन पूर्णतः मुगल सत्ता के अधीन था। मुगलों की सहायता से उसने बघेलखंड क्षेत्र में लोधी और बुंदेला शासकों के वद्रोह को दबा दिया। उनका स्थान अनूप संह ने लया।

अनूप संह-

समयाव ध – 1640 – 1675 ई

उसके शासन काल में उसका ओरछा के पहाड़ संह बुंदेला से संघर्ष हुआ इस समय वह भगोड़ा हो गया कन्तु शाहजहाँ की सहायता से उसने रीवा में अपनी सत्ता पुनः स्था पत कर ली। इस बीच छत्रशाल बुंदेला ने मैहर (सतना) पर कब्जा कर लया।

राजभव संह -

समयाव ध – 1675 – 1692 ई

वह संस्कृत के वद्वान और कला और वास्तुकला के संरक्षक थे। उन्होंने होत्रकल्पद्रुम लखा और महामृत्युंजय मंदिर (रीवा) का निर्माण कया।

अनिरुद्ध संह -

समय अव ध – 1692 – 1700 ई

उसके शासनकाल में छत्रशाल के पुत्र हृदयशाह ने रीवा पर आक्रमण कया।

राजा अवघुत संह -

समयाव ध – 1717 – 1755 ई

इनके शासन काल में बघेल-बुंदेला संघर्ष चरम पर था। इस संघर्ष को बुन्देली युद्ध के नाम से जाना जाता है।

YOUR SUCCESS IS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

शुरुआत में बघेलखंड बुंदेला शासकों के नियंत्रण में था ले कन लगभग 1726 में हृदयशाह बुंदेला ने रीवा की कमान संभाली। जैसा क पहले उल्लेख कया गया है, अनूप संह ने मुगलों की मदद से रीवा में अपना अ धकार बहाल कर लया जिससे दोनों राजवंशों के बीच तनाव पैदा हो गया। बुंदेलों और बघेलों के बीच बघेलखंड क्षेत्र के इस पूरे संघर्ष को बघेल-बुंदेला संघर्ष कहा जाता है।

राजा अजीत संह -

समयाव ध – 1755 – 1809 ई

उनके शासनकाल में मालवा में मराठों का उदय हुआ, पश्चिमी बघेलखंड, सोहागपुर मराठा शक्ति के नियंत्रण में थे। बांदा के नवाब, अलीबहादुर ने हमला कया ले कन अजीत संह ने उसे अपने क्षेत्र पर हमला न करने के लए पैसे दिए।

1802 में, बे सन की सं ध पर हस्ताक्षर कए गए और ब्रिटिश सत्ता स्था पत हुई।

महाराजा जय संह -

समयाव ध – 1809 – 1833 ई

1812 में करीम खान के नेतृत्व में पंडारियों ने रीवा पर आक्रमण कया। इस प्रकार अक्टूबर में, उन्होंने पंडारियों को दबाने और रीवा के महाराजा के रूप में अपने अ धकार को स्वीकार करने के लए अंग्रेजों के साथ सं ध की थी। इस सन्धि को बाँदा की सन्धि कहते हैं।

वे हिन्दी और संस्कृत के वद्वान थे। उन्होंने हर्षचरित्र-चंद्रिका लखी। 1833 में, उन्होंने वश्वनाथ संह (सबसे बड़े बेटे) को अगला उत्तरा धकारी घो षत कया।

वश्वनाथ संह -

समयाव ध – 1833 – 1854 ई

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE) YOUR SUCCESS OUR PRIORITY

वह अंग्रेजों के लए कठपुतली शासक था। रीवा के दरबार में ब्रिटिश रीजेंट रिचर्डसन था। वश्वनाथ संह ने आनंद-रघुनंदन, ध्रुवाष्टक और कबीर बीजक की रचना की।

रघुराज संह -

समयाव ध – 1854 – 1880 ई

वे वश्वनाथ संह के पुत्र थे। उनके शासनकाल के दौरान ब्रिटिश रीजेंट ओसबोर्न था। उनके दीवान (मंत्री) दीनबंधु पांडे अंग्रेजों की गुप्त सहायता में थे, जिसने उनके प्रशासन में बहुत संकट पैदा कया, इस प्रकार रघुराज संह ने उन्हें सर दिनकर राव (ग्वा लयर रीजेंसी के मंत्री) के साथ बदल दिया।

दिनकर राव की नीतियां -

- उन्होंने लगान (कराधान) में अंकन योजना की शुरुआत की।
- उसने फौजदारी न्यायालय की स्थापना की और उसका नाम मताक्षरा कचहरी रखा।
- इलाहाबाद-जबलपुर रेल लाइन को सतना से जोड़ा गया।
- 1871 में, उन्होंने बघेलखंड रीजेंसी की स्थापना की।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

1857 का वद्रोह –

रघुराज संह ने प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों का समर्थन कया और अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता सेनानियों को सहायता प्रदान की। 1880 में उनकी मृत्यु हो गई।

ठाकुर रणमत संह 1857 के वद्रोह में रीवा का चेहरा थे। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों की सेना मुक्त फौज की स्थापना की।

श्याम संह, धीर संह, पंजाब संह मुक्त फौज के सदस्य थे।

हीरा संह ने उन्हें धोखा दिया और 1 अगस्त, 1859 को अंग्रेजों द्वारा उन्हें फांसी दे दी गई।

1871 में, वद्रोह के बाद बघेलखंड एजेंसी की स्थापना की गई जिसमें पांच प्रांत शा मल थे - रीवा, नागौर, मैहर, कोठी और सोहावल।

यह स्थापना वफल साबित हुई क्यों क रघुराज वत्त को संभाल नहीं पाए और अंग्रेजों को रीवा की कमान अपने हाथों में लेने की अनुमति दी।

इस प्रकार रीवा अंग्रेजों की जेब में चला गया।

रघुराज संह की मृत्यु के बाद का युग (1880-1895 ई.) को अ धपति युग माना जाता था, क्यों क उनके पुत्र वेंकटरमण संह अवयस्क थे।

वेंकटरमन संह -

समयाव ध – 1895-1918 ई

वेंकटरमण संह की नीतियां-

- 1895 में, उन्होंने अकाल से प्रभा वत लोगों के लए एक कोष की स्थापना की।
- उन्होंने मंत्री (दीवान) का पद समाप्त कर दिया।
- उन्होंने सरस्वती पुस्तकालय का निर्माण कया।
- उसने दीवानी अदालतों की स्थापना की।
- 1902 में, उन्होंने दरबार प्रेस और "भारत भारत" - समाचार पत्र खोला
- रीवा से हिन्दी साप्ताहिक "सुभ चंतक" प्रका शत होता था।
- उसने बाघों के शकार पर रोक लगा दी।

उनके पुत्र गुलाब संह अपने पता की मृत्यु के समय नाबा लग थे, इस प्रकार वे 1922 में संहासन पर चढ़े।

महाराजा गुलाब संह -

समयाव ध – 1922- 1946 ई

महाराजा गुलाब संह जू देव बहादुर, प्रशासनिक और सामाजिक

सुधारों की ओर केंद्रित थे, इस प्रकार उन्हें प्रथम शाही सामाजिक कार्यकर्ता माना जाता है। उनके शासनकाल के दौरान ब्रिटिश अ धकारी कोल्विन रीजेंट थे। 1946 में उनकी मृत्यु हो गई।

गुलाब संह के सुधार-

- 1932 में, उन्होंने रीवा की राज्य परिषद की स्थापना की।
- 1940 में सतना में बघेलखण्ड फ्लोर मल की स्थापना की गई।
- रीवा का पहला न्यायालय बुढार में शुरू कया गया था।
- रीवा में बैंक ऑफ बघेलखंड खोला गया।
- 1934 में रीवा का शक्षा बोर्ड खोला गया।
- सहभोज प्रथा- जातिवाद पर अंकुश लगाने के लए सामुदायिक बुफे शुरू कया गया था।
- पवई नियम लागू कया गया था, जिसका उद्देश्य कर संग्राहकों द्वारा कराधान को रोकना था।

महाराजा मार्तंड संह जू देव -

समयाव ध -1946-1995 ई

उन्हें रीवा का अंतिम शासक माना जाता है। ऐसा माना जाता है क उनके शासनकाल के दौरान रीवा में पहला सफेद बाघ देखा गया था।

रीवा / बघेलखंड की रियासत को भारत के साथ एकजुट कया गया था क्यों क उन्होंने परिग्रहण के साधन पर हस्ताक्षर कए थे।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

• बुंदेलखंड की रियासतें–

बुंदेलखंड मध्य प्रदेश का वह हिस्सा है जो भौगो लक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध है। वंध्य श्रृंखला के कारण इसे पहले वंध्येलखंड कहा जाता था ले कन बाद में इसका नाम बुंदेलखंड रखा गया।

चंदेल शासकों के शासनकाल के दौरान इस क्षेत्र को जेजाकभुक्ति कहा जाता था। बुंदेलखंड की प्रमुख रियासतें हैं -

ओरछा राज्य	छतरपुर रियासत
पन्ना राज्य	शाहगढ़ रियासत
चरगांव/चखारी राज्य	जैतपुरा राज्य
चंदेरी राज्य	अजयगढ़ राज्य
दतिया राज्य	वजय राघवगढ़ राज्य
गरोनी राज्य	मोघा राज्य

ओरछा रियासत -

संस्थापक - रुद्रप्रताप संह

समयाव ध – 1501 – 1531 ई

ओरछा राजवंश का वस्तार ओरछा से का लंजर और कालपी तक था। रुद्रप्रताप संह को ओरछा राजवंश का संस्थापक पता माना जाता है। वह सकंदर लोधी, इब्राहिम लोधी और बाबर के समकालीन थे। ग्वा लयर के तोमर से उसके मैत्रीपूर्ण संबंध थे। 1531 में उनकी मृत्यु हो गई।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

भारती चंद्र -

समयाव ध – 1531 – 1554 ई

उन्होंने ओरछा को राजधानी शहर के रूप में स्था पत कया और ओरछा कला, रामराजा मंदिर और रानी महल (महल) का निर्माण कया। उसने शेरशाह सूरी के हमले के खलाफ का लंजर शासक कीरत संह की सहायता की। 1554 में उनकी मृत्यु हो गई।

मधुकरशाह –

समयाव ध – 1554 – 1592 ई

वह भारती चंद्र के पुत्र थे और स्वतंत्र ओरछा साम्राज्य की स्थापना की और अकबर के समकालीन थे। उसने सरोंज, ग्वा लयर और नरवर के क्षेत्रों का अ धग्रहण कया। अकबर ने उसे अपने दरबार में बुलाया जिसे उसने अस्वीकार कर दिया और इसका परिणाम यह हुआ क उसने (अकबर) मधुकरशाह (पराजित) पर हमला करने के लए सादिक खा के नेतृत्व में अपनी सेना भेजी।

रामशाह -

समयाव ध – 1592 – 1605 ई

उन्होंने अकबर के निमंत्रण के लए मधुकरशाह के इनकार की ओर से माफी मांगी और जिसके बाद वह संहासन पर चढ़े।

वीर संहदेव –

समयाव ध – 1605 – 1627 ई

वह रामशाह का भाई था। प्रारंभ में उन्होंने बडोनी (दतिया) के क्षेत्र पर शासन कया। उसके जहाँगीर से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। जहाँगीर ने उसे अबुल फ़ज़ल को यह वादा करते हुए मार डाला क वह ओरछा के संहासन पर आसीन होगा और रामशाह को गद्दी से हटा दिया जाएगा। सब कुछ योजना के अनुसार हुआ।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

वीर संहदेव द्वारा अबुल फजल की हत्या कर दी गई, ओरछा के राजा के रूप में उसके अ धकार को जहांगीर ने स्वीकार कर लया और रामशाह को चंदेरी भेज दिया गया।

उसके शासन काल में बुन्देलखण्ड की वास्तुकला का वकास हुआ –

- जहांगीर महल (ओरछा)
- राम मंदिर (मथुरा)
- धमोनी कला (सागर)
- झांसी का कला (झांसी)
- करेरा कला (शवपुरी)

जुझार संह - वह वीर संहदेव के बड़े पुत्र थे जिन्होंने मुगल आ धपत्य का वरोध कया था। 1633 में, उसने गोंड शासक प्रेम शाह पर हमला कया और चौरागढ़ कले का अ धग्रहण कया ले कन शाहजहां के खलाफ वद्रोह ने उसे भगोड़ा बना दिया।

पहाड़ संह - ये जुझार संह के छोटे भाई थे। उन्होंने चौरागढ़ के युद्ध लूट से मुगल खजाने को भरकर चौरागढ़ कले को राजनीतिक रूप से मुगलों की जेब से मुक्त कराया।

वक्रमजीत संह -

समयाव ध – 1776 – 1817 ई

1783 में, लगातार मराठा आक्रमणों के बाद उन्होंने राजधानी को टिहरी (टीकमगढ़) में स्थानांतरित कर दिया। 1816 में, उन्होंने बघाट (निमाड़) के जागीरदारों के खलाफ बघाट की लड़ाई लड़ी।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

धर्मपाल संह -

समयाव ध – 1817 – 1834 ई

वह लॉर्ड हेस्टिंग्स के साथ वक्रमजीत संह का पुत्र था, उसने पंडारियों का दमन कया। उन्होंने जीन बैप्टिस्ट (फ्रांस के अ धकारी) को हराया। उनकी तीन पत्नियां थीं गरई रानी, लड़ाई रानी और हरई रानी सभी निःसंतान थीं। इस प्रकार 1812 में, उन्होंने सहायक गठबंधन पर हस्ताक्षर कए।

लड़ाई सरकार - वह धर्मपाल की पत्नी थी जो ओरछा की वक्टोरिया के नाम से प्र सद्ध है। 1842 में, उन्होंने बुंदेला वद्रोह को दबाने के लए कर्नल स्लीमैन की मदद की। उनके सेनापति नत्थे खा को रानी लक्ष्मीबाई पर हमला करने के लए भेजा गया था। नत्थे खा ने रानी लक्ष्मीबाई को बंदी बनाने में ह्यूग रोज की मदद की।

बाद के शासक –

- तेज संह - (1834-1842)
- सूरज संह - (1842-1874)
- हमीर संह - (1848-1865)
- प्रताप संह - (1874-1930)
- वीर संह – (1930-1950)

YOUR SUCCESS OUR PR
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

पन्ना रियासत -

बुंदेला मु खया चंपत राय के पुत्र छत्रसाल को पन्ना रियासत का संस्थापक माना जाता है।

राजधानी- पन्ना

छत्रसाल बुंदेला -

समयाव ध – 1649-1731 ई

उन्हें "बुंदेलखंड केसरी", "बुंदेलखंड के शवाजी" के नाम से भी जाना जाता था

1665 में राजा जय संह की सहायता से छत्रसाल को प्र शक्षण के लए मुगल सेना में भर्ती कराया गया। बाद में उन्होंने बीजापुर की लड़ाई में देवगर्थ के गोंड शासक (पराजित) के खलाफ अपनी क्षमता साबित की, ले कन उनकी योग्यता को मान्यता नहीं मली और इसके कारण पन्ना की रियासत का गठन हुआ।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A Unit of RACE)

1678 में, पन्ना को राजधानी घो षत कया गया था, बाद में यो गराज प्राणनाथ द्वारा उनका राज्या भषेक कया गया था।

छत्रसाल बुंदेला की उपलब्धियां –

- उसने शवाजी के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्था पत कए।
- उसने धमोनी के शमशेर खान को हराया।
- उसने औरंगजेब को एक युद्ध (वा सया की लड़ाई) में हराया, और राजा की उपा ध के साथ 4000 के मनसब से सम्मानित कया गया।

• उसने का लंजर का कला जीत लया और मांधाता चौबे को फोर्ट कमांडेंट शप के रूप में नियुक्त कया।

• 1728-29 में, मोहम्मद खान बंगश के हमले का पेशवा बाजी राव प्रथम की मदद से छत्रसाल ने वरोध कया और उसे हरा दिया। (उन्होंने बदले में उन्हें अपना तीसरा पुत्र मान लया)

• उसने धुबेला महल का निर्माण करवाया।

• क व भूषण, लाल क व और हंसराज उनके दरबारी क व थे।

1731 में, राजा छत्रसाल की मृत्यु के बाद, उनके राज्य को उनके पुत्रों-हृदय शाह, जगतराय और पेशवा बाजीराव प्रथम में वभाजित कया गया था।

Hriday Shah	Panna,Kalinjr, Gadakota, Mhow, Shahgarth,
Jagatrai	Jaitpur, Bijawar, Banda, Charkhari,
Bajirao I	Jhansi, Hata, Kalpi, Guna,

हृदयशाह ने रीवा में बुन्देली दरवाजा बनवाया।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

बाद के शासक-

कशोर संह (1758-1834 ई.)

हरिवंशराय- उन्होंने बुंदेला वद्रोह में पन्ना से अंग्रेजों की सहायता की।

नृपति संह - उन्होंने 1857 के वद्रोह में अंग्रेजों की मदद की।

1857 के वद्रोह के बाद, पृथ्वी संह ने गढ़ाकोटा में वद्रोह कया, जिसके कारण शाहगढ़ की रियासत का उदय हुआ।

शाहगढ़ की रियासत-

छत्रसाल की मृत्यु के बाद, हृदयशाह ने शाहगढ़ क्षेत्र का कार्यभार संभाला, बाद में पृथ्वी संह के वद्रोह ने राजधानी पन्ना के साथ शाहगढ़ की स्वतंत्र रियासत की स्थापना की।

हरि संह- अगले शासक ने राजधानी को गढ़ाकोटा में स्थानांतरित कर दिया।

मर्दन संह - उसने सागर में मालथों के कले का निर्माण कया। 1809 में, रघु जी भोंसले ने गढ़कोटा पर आक्रमण कया और वे मारे गए।

Arjun Singh- He reinstated the lost region of gadakota with the help of Scindias and made Shahgarth the capital.

बखतबली- यह अर्जुन संह का भतीजा था, इसके शासनकाल में बुंदेला वद्रोह (1842) हुआ। गढ़कोटा के क्षेत्र पर कब्जा करने की महत्वाकांक्षा के साथ उन्होंने हीरापुर के हृदयशाह को धोखा देकर और कब्जा करके अंग्रेजों की सहायता की। हृदयशाह पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों ने भक्तबली की मदद नहीं की, इस प्रकार 1857 के वद्रोह में, वह अपने सेनापति बोधन दौआ के साथ अंग्रेजों के खलाफ खड़ा हो गया।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

जैतपुरा रियासत -

संस्थापक - जगतराय

छत्रसाल की मृत्यु के बाद, जैतपुरा राज्य क्षेत्र जगतराय के अधीन आ गया। उसके बाद पहाड़ संह, गजराज संह और केसरी संह सफल हुए।

केसरी संह-

1812 में, उन्होंने मुहम्मद शाह और बहादुर शाह हमलों के खलाफ अपने राज्य की सुरक्षा के लए अंग्रेजों के साथ एक सं ध की।

मुहम्मद शाह और बहादुर शाह बांदा के सरदार थे। उन्हें बुंदेलखंड का कंगमेकर भी कहा जाता था। केसरी संह के बाद उनके पुत्र राजा परी क्षत ने गद्दी संभाली

राजा परी क्षत -

समयाव ध – 1813 – 1844 ई

वह जैतपुरा रियासत के सबसे प्र सद्ध शासक थे, उन्होंने बुंदेला वद्रोह (1842) और स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लया था। उन्होंने बनवारी और भूरागढ़ की लड़ाई में अंग्रेजों को हराया।

राजा परी क्षत का ववरण प्रदान करके गोलंदाज़, रतन संह, लड़ाइसरकर ने अंग्रेजों की सहायता की। अंततः वह पकड़ा गया, पहले खेत संह कठपुतली शासक था और 1849 के बाद जैतपुरा पूरी तरह से अंग्रेजों के कब्जे में आ गया और वह 1200 का पेंशनभोगी बन गया।

चरखारी रियासत –

चरखारी का क्षेत्र जगतराय के अधीन था। 1765 में खुमान संह ने इस क्षेत्र की कमान संभाली। वजयबहादुर का शासन था, उसने ईशानगर तालाब बनवाया। वजयबहादुर ने रतन संह (रणजीत संह के पुत्र) को अपना उत्तरा धकारी घो षत कया जिसके कारण राजा परी क्षत ने वश्वासघात कया और स्वयं को चरखारी का शासक घो षत कर दिया। इसने राजा परी क्षत और रतन संह के बीच अंतर पैदा कर दिया और इस प्रकार बुंदेला वद्रोह के दौरान रतन संह ने अंग्रेजों का पक्ष लया।

चंदेरी रियासत –

जहाँगीर ने 1609 में रामशाह को वनपुरा का क्षेत्रीय नियंत्रण दिया। बाद में शाहजहाँ ने चंदेरी के क्षेत्र को जोड़ा और भरत संह (रामशाह के वंशज) को नियंत्रण

दे दिया। भरत संह ने अपनी राजधानी चंदेरी बनाई और वहाँ से शासन कया। जब सं धया शासकों के साथ जीन बैप्टिस्ट ने चंदेरी के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लया तो मोर प्रह्लाद संहासन पर चढ़ गए। उसने राजधानी को वनपुरा स्थानांतरित कर दिया। 1842 में, उनकी मृत्यु हो गई और मर्दन संह ने उनका उत्तरा धकारी बना लया।

मर्दन संह-

समयाव ध – 1842 – 1858 ई

वह मोर प्रह्लाद का पुत्र था। चंदेरी पर अपना अ धकार बहाल करने के लए, उन्होंने बुंदेला वद्रोह में अंग्रेजों की सहायता की ले कन अंग्रेजों ने अपना वादा पूरा नहीं कया। इस लए, 1857 में मर्दन संह ने अंग्रेजों के खलाफ लड़ाई लड़ी।

अजयगढ़ रियासत -

1765 में, जैतपुरा के शासक पहाड़ संह ने अपने भतीजे को अजयगढ़ में रखा।

गुमान संह के दत्तक पुत्र बखत संह ने इस समय अजयगढ़ के संहासन पर चढ़ाई की, वे कले के कमांडेंट लक्ष्मण दौआ थे। 1857 के वद्रोह में महीपत संह की पत्नी ने अंग्रेजों का साथ दिया।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

छतरपुर रियासत -

प्रारंभ में छतरपुर की स्थापना राजा छत्रसाल ने की थी, ले कन छतरपुर रियासत की स्थापना का श्रेय सोन संह/सोनजू पवार को जाता है। 1785 में उन्होंने छतरपुर को अपनी राजधानी घो षत कया।

प्रताप संह-

वह सोनेजू पवार के सबसे बड़े बेटे थे। उन्होंने 1786 में, 1816 में संहासन को बैठाया; उनका अंग्रेजों के साथ सुरक्षा समझौता था। अत: उसने नौगाँव में एक

छावनी की स्थापना की। उन्होंने अपने भतीजे जगतराय को गोद लया और संहासन पर बिठाया।

जगतराय-

1854 में, प्रताप संह की मृत्यु के बाद, उनकी पत्नी जगतराय की रीजेंट बन गईं। 1857 के वद्रोह के दौरान, प्रताप संह की पत्नी ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन कया जब क जगतराय ने अंग्रेजों का पक्ष लया।

दतिया रियासत -

वीर संह बुंदेला ने अपने पुत्र भगवान राव को बडोनी का क्षेत्र दिया। उसने क्षेत्र का वस्तार कया और इस तरह दतिया रियासत अस्तित्व में आई।

शासकों ने राव की उपा ध धारण की	शासकों ने राजा की उपा ध धारण की
राव भगवान संह	राजा परी क्षत संह
राव शुभकरण संह	राजा वजयबहादुर संह
राव दलपत संह	राजा भवानी संह
राव रामचंद्र संह	राजा गो वंद संह जूदेव
राव इंद्रजीत संह	
राव शत्रुजीत संह	

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

भगवान राव बुंदेला -

उन्हें दतिया राज्य का प्रथम शासक माना जाता है। वह राव शुभकरण और फर राव दलपत संह द्वारा सफल हुए। दतिया के शासक ने राव की उपा ध धारण की; शुरू में वे बुंदेला के वंशज थे। राव दलपत संह की मृत्यु के बाद उत्तरा धकार

की लड़ाई हुई और राव रामचंद्र संह वजयी हुए। दतिया में उनके शासन को मुगल शासक बहादुर शाह ने मंजूरी दी थी।

1801 से 1839 तक, दतिया राजा परी क्षत के नियंत्रण में था।

वजयराघवगढ़ रियासत -

यह रियासत सतना के समीप स्थित थी। जब पन्ना रियासत में अशांति पैदा हुई, तो बैनी हजुरी (कच्छवाहा) ने फायदा उठाया और मैहर के क्षेत्र को हा सल कर लया। 1826 में, मैहर का वभाजन हुआ और इस तरह वजयराघवगढ़ अस्तित्व में आया।

राजा वष्णु संह मैहर के राजा बने और प्रयागदास वजयराघवगढ़ के संहासन पर आसीन हुए। प्रयागदास के बाद साबिर अली की रीजेंसी के तहत उसका नाबा लग बेटा अंग्रेजों का कठपुतली शासक बन गया। सरजूप्रसाद अंग्रेजों के खलाफ 1857 के वद्रोह में रीजेंट होने के साबिर अली के इस फैसले के खलाफ थे।

मोघा रियासत –

इस राज्य की स्थापना अनूप गरी हिम्मत बहादुर ने की थी।

करौली रियासत -

इस राज्य की स्थापना गोपाल संह ने की थी।

- गोंडवाना राजवंश –

गोंडवांस क्षेत्र का इतिहास अति प्राचीन है। रामायण में महाकाव्य युग के दौरान इसे दंडकारण्य कहा जाता था जहां गोंड जनजाति ने पाठ कया था। हृदयशाह द्वारा संस्कृत भाषा में अं कत रामनगर शलालेख से यह जानकारी मलती है क इस क्षेत्र में 64 शासकों ने शासन कया था।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(YOUTH OF RACE)

कर्नल स्लीमेन ने अपने अ भलेख में यादवराय नाम के एक शासक का भी उल्लेख कया है जिसने प्रारंभ में शासन कया था और सुमेरशाह जिसे अंतिम शासक माना जाता है।

गणेशनरूपवर्णम - यह एक संस्कृत लेख है जो 64 गोंड शासकों की जानकारी प्रदान करता है।

गोंड वंश के शासक रावण से अपना वंश बताते हैं।

अन्य स्रोत -
अकबरनामा
सूरजप्रकाश (सख ग्रंथ)
वीरभानुदायकाव्यम
हरका का सती शलालेख
रसरत्नमाला (संग्रामशाह)
तत्व चंताम ण (महेश ठाकुर)
गजेंद्रमोक्षकाव्यम (लक्ष्मीप्रसाद दी क्षत)

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

गोंडवाना राजवंश की रियासतें

- गढ़ मंडला
- देवगढ़
- चांदा
- खेरला

गढ़ मंडला का गोंड राज्य –

यादवराय गढ़ के गोंड के संस्थापक थे। उन्हें अग्रणी गोंड शासक भी माना जाता है। उन्होंने दमोह के शासक की बेटी से ववाह कया और गढ़-मंडला राज्य की स्थापना की।

अकबरनामा के अनुसार यादवराय को खरजी, गोरक्षदास, सुखददास और अर्जुनदास ने उत्तरा धकारी बनाया।

अर्जुनदास -

समय अव ध – 1506 – 1510 ई

वह एक महत्वाकांक्षी गोंड शासक था। अपने शासनकाल के दौरान, गुरु नानक ने गढ़ का दौरा कया (स्रोत - सूरजप्रकाश।)

हरका और दमोह में मले शलालेखों के अनुसार, अर्जुनदास को उनके सबसे बड़े पुत्र अमहदास ने मार डाला था, जब अर्जुनदास ने जोगीदास (छोटे बेटे) को अपना उत्तरा धकारी घो षत कया था।

संग्राम शाह -

समयाव ध – 1510 – 1543 ई

उनका मूल नाम अमहदास था।

गुजरात के बहादुरशाह ने अमहदास द्वारा सहायता प्राप्त होने पर रायसेन की जीत पर उन्हें संग्राम शाह की उपा ध दी। उनकी पत्नी का नाम सुमति और पद्मावती था। दलपत शाह और चंद्र शाह उनकी दूसरी पत्नी पद्मावती के पुत्र थे। उसने सोने, चांदी और तांबे के सक्के जारी कए जिनमें तेलुगु और देवनागरी ल प में पुलुतवंशीय लखा हुआ है।

संग्राम शाह की उपलब्धियां –

- उन्होंने अपने साम्राज्य को 52 पैले डयम (कले) तक बढ़ाया और इस प्रकार बवांगदा धपति की उपा ध धारण की।
- सुरक्षा के लहाज से ये 52 पैले डयम उनके गढ़ थे।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A Unit of RACE)

- उसने संग्रामपुर नामक नगर की स्थापना की।
- गढ़ा में उसने संग्रामशाह जलाशय, बाजनामठ और मदन महल का निर्माण करवाया।
- उन्होंने रसरत्नमाला की रचना की।
- प्र सद्ध वद्वान दामोदर ठाकुर उनके संरक्षण में थे, उन्होंने संग्रामशाही ववेक और दिव्यनिर्णय की रचना की।

दलपतशाह-

समयाव ध – 1543 – 1550 ई

वह संग्राम शाह के पुत्र थे। जैसे ही वह संहासन पर चढ़ा, उसने राजधानी को गढ़ा से संगौरगढ़ स्थानांतरित कर दिया।

वर्ष 1542 में उनका ववाह कीरत संह की पुत्री 'दुर्गावती' से हुआ।

उन्होंने आधार संह को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कया। केशव लोगाची (वद्वान), महेश ठाकुर (तत्व चंताम ण के रचयिता) इनके संरक्षण में थे।

दलपत शाह की मृत्यु के बाद, उसका नाबा लग पुत्र संहासन पर चढ़ा, ले कन रानी दुर्गावती के संरक्षण में।

रानी दुर्गावती-

समयाव ध- 1550- 1564 ई

वह पहली गोंड रानी, दपलट शाह की पत्नी और चंदेल शासक करत संह की बेटी थीं।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

उनकी सहायता के लए अधर संह को सेनापति और वामन ठाकुर को प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त कया गया।

उसकी राजधानी 'चौरागढ़', नर संहपुर थी।

उसने अफगान शासकों का वरोध कया और उन्हें हराया, बाद में उन्हें सेना में शा मल होने की अनुमति दी। मालवा के बाज बहादुर को उसने दो बार हराया था। 1564 में, नराई की लड़ाई में- वह मुगल सेना से हार गई थी।

महेश ठाकुर, दामोदर ठाकुर, पोप महापात्र, नरहरि महापात्र रानी दुर्गावती के संरक्षण में सेवा करने वाले कुछ वद्वान हैं। उन्होंने वल्लभ समुदाय से शपथ ली और वठ्ठल दास को अनुदान दिया।

24 जून - ब लदान दिवस - आशफ खान के नेतृत्व में मुगल सेना ने गढ़ पर हमला कया और नरई की लड़ाई में रानी दुर्गावती की हार हुई। 24 जून, 1564 को मुगल सेना ने उसे चारों ओर से घेर लया और बचने का कोई रास्ता नहीं तलाशा। उसने अपनी जान लेने का फैसला कया। इसके साथ गढ़ मुगल की जेब में आ गया और आशफ खान को गढ़ के अधीक्षक के रूप में नियुक्त कया गया।

मप्र सरकार ने रानी दुर्गावती के ब लदान को याद करने के लए 24 जून को ब लदान दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की।

for Competitive Exams
(A unit of RACE)

चन्द्रशाह –

समयाव ध – 1564 – 1576 ई

वह दलपतशाह का छोटा भाई था और रानी दुर्गावती की मृत्यु के बाद संहासन पर चढ़ा। उनका उत्तरा धकारी उनके पुत्र मधुकर शाह थे।

मधुकर शाह –

समयाव ध – 1576 – 1586 ई

वह पहला गोंड शासक था जिसने मुगलों की खुशी के तहत अपने शासन का आनंद लया। माधव बाजपेयी उनके पुजारी थे। उसके शासन काल में गोंडों ने अपने साम्राज्य का वस्तार बघेलखण्ड तक कर लया था। 1586 में उनकी मृत्यु हो गई।

प्रेमशाह –

समयाव ध – 1586 – 1626 ई

उन्होंने महाराजा धराज की उपा ध धारण की। यह जानकारी अमोदा अ भलेख से प्राप्त होती है। उन्होंने वष्णु दी क्षत और गंगाधर बाजपेयी को आश्रय प्रदान कया। उसके शासन काल में बुंदेला शासक जुझार संह बुंदेला ने चौरागढ़ पर आक्रमण कर प्रेमशाह की हत्या कर दी।

हृदयशाह -

वह गोंड राज्य के सबसे प्र सद्ध शासकों में से एक थे। वह कला और वास्तुकला से प्यार करता था, राजधानी को रामगढ़ में स्थानांतरित कर दिया क्यों क चौरागढ़ बुंदेला के नियंत्रण में था। यह जानकारी लक्ष्मीप्रसाद दी क्षत द्वारा ल खत गणेशनरूपवर्णम और गजेंद्रमोक्षकाव्यम से प्राप्त हुई है।

उन्होंने रचना की- हृदयप्रकाश और हृदयकौतुक

उन्होंने गढ़ के पास गंगासागर तालाब का निर्माण कया।

वह नरेंद्रशाह की तुलना में पहाड़ संह की तुलना में हरि संह की तुलना में छत्रशाह द्वारा सफल हुआ।

नरेंद्रशाह -

ये छत्रशाह के पुत्र थे। पहाड़ संह के साथ उसका युद्ध हुआ जिसमें वह पराजित हुआ ले कन बाद में केतुगाँव के युद्ध में उसने पहाड़ संह को पराजित कर मार

RAU'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

डाला। उसने राजधानी को मंडला में स्थानांतरित कर दिया और देवी महाकाली के अं कत सक्कों को जारी कया।

महाराजशाह -

समयाव ध – 1713 – 1741 ई

उनके शासनकाल के दौरान गढ़ पर मराठों ने हमला कया और बालाजी बाजीराव ने मंडला को अपने कब्जे में ले लया।

निजामशाह –

उनके शासनकाल के दौरान लक्ष्मीप्रसाद दी क्षत ने गजेंद्रमोक्षकाव्यम लखा था।

नरहरिशाह -

समयाव ध – 1776 – 1780 ई

नरहरिशाह एक वधवा वलास कुवारी की सहायता से संहासन पर बैठा।

सुमेर शाह –

समयाव ध – 1780 – 1782 ई

उसने वलास कुवारी को मार डाला और संहासन पर चढ़ा। वह पेशवा प्रतिनि ध बिसाजी (मराठों) के अधीन एक कठपुतली शासक था, ले कन एक स्वतंत्र राज्य पर शासन करने की महत्वाकांक्षा के साथ, उसने 1782 में मनगढ़ की लड़ाई लड़ी जिसमें वह हार गया। मराठों ने जीत हा सल की और नरहरिशाह को वापस संहासन पर बिठाया।

नरहरिशाह -

सत्ता पुनः प्राप्त करने के बाद, वह मराठों के पूर्ण नियंत्रण में था। उनकी महत्वाकांक्षा ने बीसाजी को मार डाला और मराठा प्रतिनि ध मोराजी ने दो

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

लड़ाइयाँ (तेजगढ़ और चौरागढ़) लड़ीं जिनमें नरहरिशाह की हार हुई। 1789 में, उन्हें खुरई के कले में कैद कर दिया गया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई।

सुमेर शाह के पुत्र शंकर शाह और पोते रघुनाथ शाह थे। ये वही स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने अंग्रेजों के खलाफ 1857 के वद्रोह में भाग लया था।

प्रमुख गोंड कले

कले का नाम	द्वारा बनाया गया	स्थान
गढ़ा कला	मदन शाह	गढ़ा, जबलपुर
संगौरगढ़ का कला	संग्राम शाह	दमोह
चौरागढ़ का कला	संग्राम शाह	नर संहपुर
रामनगर कला	हृदय शाह	जबलपुर

प्रमुख मंदिर / मठ

बाजना मठ/बटुक भैरोनाथ मंदिर	जबलपुर
पच मठ	जबलपुर
मठिया मठ	गोपालपुर
कुआँ गाँव मंदिर	कटनी

प्रमुख महल

राय महल	आमखास
रानी महल	मोती महल और बेगम महल

for Competitive Exams

प्रमुख तालाब और जलाशय

बैरागढ़ बावड़ी	संग्राम सागर तालाब
रामनगर बावड़ी	रानीताल
छोटा टोला बावड़ी	गंगासागर
अधारताल	देवताल

प्रमुख साहित्य

लखें	लेखक
हृदयकोटुक	हृदय शाह
रसरतनमाला	संग्राम शाह
गणेशनपरवर्णम	रूपनाथ झा
तत्व चंतम ण	महेश ठाकुर
संग्रामशाही ववेक	दामोदर ठाकुर
दिव्य निर्णय	दामोदर ठाकुर
गजेन्द्रमोक्षकाव्य	लक्षी प्रसाद दी क्षत
रसमंजरी	भानुदत्त मश्रा
दुर्गावती प्रकाश	पद्मनाथ भट्टाचार्य
सर्वसंदेश्वरतंत संग्रह	महेश ठाकुर

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

देवगढ़ का गोंड राज्य –

यह गढ़ के गोंड की शाखाओं में से एक थी जिन्होंने देवगढ़ के क्षेत्र में अपनी स्थापना की।

राजधानी – हरियागढ़ (छिंदवाड़ा)

तुलोवा -

वह देवगढ़ के गोंड राज्य का प्रथम शासक था।

राजा जाटव -

वह प्रेमशाह (मंडला के गोंड शासक) के समकालीन थे। उसने देवगढ़ राज्य को फर से स्था पत करने और राजधानी को देवगढ़ स्थानांतरित करने के लए धनसूर और रणसूर को मार डाला। उन्होंने देवगढ़ में एक कले और दशावतार मंदिर का निर्माण कया। दलशाह जाटव का सबसे बड़ा पुत्र था जिसने जुझार संह बुंदेला की मदद की जब वह शाहजहाँ का भगोड़ा था।

कोक शाह द् वतीय –

समयाव ध – 1680 – 1686 ई

उन्हें गोरखशाह के नाम से जाना जाता था। उसने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली और धर्म परिवर्तन कर लया। उनका परिवर्तित नाम इस्लामयार खान था।

महिपतशाह-

समयाव ध ––1684- 1709 ई

वह कोक शाह द् वतीय का ज्येष्ठ पुत्र था। वह औरंगजेब की मदद से संहासन पर चढ़ा, जिसके लए उसने उसे स्वीकार कर लया और अपना धर्म परिवर्तित कर लया, जो उसने कया और औरंगजेब ने देवगढ़ में अ धकार स्वीकार कर लया। उनका परिवर्तित नाम बख्तबुलंद था और देवगढ़ इस्लामगढ़ बन गया।

चांद सुल्तान -

समयाव ध – 1709-1729 ई

वह बख्तबुलंद का सबसे बड़ा बेटा था। उसने राजधानी को नागपुर स्थानांतरित कर दिया। बाद के शासक अक्षम थे, इस प्रकार रघुजी भोंसले ने राज्य को अपने अ धकार में ले लया।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

चंदा का गोंड राज्य –

समय अव ध – 1200 – 1751 ई

संस्थापक शासक – खंडया बल्लालशाह

खेरला का गोंड राज्य –

इस गोंड राज्य का वस्तार अमरावती तक बैतूल के आसपास तक था। इसे बदनूर राज्य के जे नाम से भी जाना जाता है।

ववेक संधु, एक मराठी ग्रंथ राज्य की जानकारी प्रदान करता है। प्रमुख गोंड शासक थे - राजा एल, नर संहराय और जैतपाल।

खेरला का कला बैतूल में स्थित है। मुगल शासकों ने इस गोंड क्षेत्र पर लगातार आक्रमण कया, इस प्रकार खेरला शासकों ने मुगलों के साथ एक सं ध की और नाम बदलकर महमूदाबाद कर दिया। बाद में यह क्षेत्र मराठा शक्ति के नियंत्रण में आ गया।

- भोपाल रियासत

भोपाल मध्य भारत की एक प्रमुख रियासत थी। भोपाल शहर की स्थापना राजा भोज ने की थी। इसे भोजपाल भी कहा जाता है।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

भोपाल राज्य की स्थापना दोस्त मोहम्मद खान ने 1707 ई. में की थी। वह मुगल सेना में पस्तुन (अफगान) सैनिक था। अकबर के शासन काल में उसका क्षेत्र 15 सूबा (प्रांत) में बंटा हुआ था। भोपाल उनमें से एक था। वह भाड़े का हो गया और औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसने मुगल साम्राज्य के वघटन का लाभ उठाया और कई प्रदेशों पर कब्जा कर लया।

1723 में भोपाल हैदराबाद के निजाम के आ धपत्य में आ गया। 1737 में भोपाल के युद्ध में मराठों ने भोपाल के नवाब को पराजित कया और राज्य से नजराना वसूल करना शुरू कया। 1818 में तीसरे एंग्लो-मराठा युद्ध में मराठों की हार के बाद भोपाल ब्रिटिश रियासत बन गया।

<u>भोपाल में नवाब का शासन:</u>

- दोस्त मोहम्मद खान –

समय सीमा – 1723 – 1726 ई

उन्हें भोपाल राज्य का संस्थापक माना जाता है। 1704 में, ग्वा लयर के पास, दोस्त मोहम्मद खान ने तारजीबेग को हराया। बाद में, भेलसा के मोहम्मद फारुख ने ग्यारसपुर, सांची, सीहोर और बैर सया के क्षेत्र का अ धग्रहण कया। उन्होंने जगदीशपुर का नाम बदलकर इस्लाम नगर कर दिया और इसे अपनी राजधानी बनाया ले कन बाद में फतेहगढ़ स्थानांतरित कर दिया।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A Unit of RACE)

उन्होंने ऊपरी झील, ढाई सदी मस्जिद के पास फतेहगढ़ कले का निर्माण कया और भोपाल की कलेबंदी की।

उनकी मृत्यु के बाद छोटे बेटे सुल्तान मोहम्मद खान ने मंत्रियों की मदद से संहासन पर चढ़ा क्यों क बड़े भाई यार मोहम्मद खान ने हैदराबाद के निज़ाम की अधीनता स्वीकार कर ली और निज़ाम यार मोहम्मद खान की मदद से अपने छोटे भाई को अलग कर दिया।

यार मोहम्मद खान -

वह दोस्त मोहम्मद खान के बड़े बेटे थे। उसने अपनी राजधानी इस्लामनगर बनाई और वह मराठों के प्रतिरोध का सामना करता रहा। भोपाल की लड़ाई (1737) मराठों के खलाफ हैदराबाद के निजाम द्वारा सहायता प्राप्त भोपाल के नवाब के बीच लड़ी गई थी। मराठा शक्ति की जीत हुई और दोरसराय की संध पर हस्ताक्षर कए गए।

नवाब फैज मोहम्मद खान –

समय सीमा – 1742 – 1777 ई

वह एक बहुत उदार शासक था जिसका झुकाव सूफीवाद की ओर था इस लए उसे सूफी नवाब भी कहा जाता है। उसके शासनकाल में मराठों ने सीहोर पर अधकार कर लया। उसका दीवान नाम घासीराम था। 1742 में उसने ईदगाह में अपने चाचा सुल्तान मोहम्मद खान के साथ लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई के बाद फैज मोहम्मद खान राहतगढ़ की जागीर अपने चाचा को दे देता है।

नवाब हयात मोहम्मद खान –

समय सीमा – 1778 – 1808 ई

वह नवाब फैज मोहम्मद खान के भाई थे। उन्होंने सालेहा बेगम के साथ उत्तराधकार की लड़ाई लड़ी और शरीफ खान के वद्रोह को दबा दिया। शरीफ खान भी नवाब हयात मोहम्मद खान के खलाफ फंदा की लड़ाई हार गए। उसने फतेहगढ़ कले की मरम्मत की।

नवाब गौस मोहम्मद खान –

समय सीमा – 1808- 1819 ई

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

उन्होंने मोहम्मद खान को इसका वजीर और दीवान छोटे खान को प्रधान मंत्री नियुक्त कया। मोहम्मद खान के बेटे - नजर मोहम्मद खान की शादी गौस मोहम्मद खान की बेटी गौहर बेगम से हुई थी। वजीर मोहम्मद खान गौस मोहम्मद की सलाह पर अपना व्यवसाय रायसेन में स्थानांतरित कर दिया, इस बीच तीन लोगों ने भोपाल पर शासन कया।

— वज़ीर मो. खान (1808-16)
— नजर मोहम्मद खान (1816-19)
— कुदि सया बेगम (1819-37)

नवाब नज़र मोहम्मद खान –

फरवरी 1818 में उनकी अंग्रेजों के साथ सुरक्षा सं ध हुई- रायसेन की सं ध। वह निःसंतान मर गया, इस प्रकार लाभ उठाते हुए ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट हेनले ने कुदि सया बेगम को भोपाल राज्य की सारी शक्ति दे दी और इस प्रकार भोपाल में बेगमों का शासन शुरू हो गया।

<u>भोपाल में बेगमों के नियम : (1819 से 1926)</u>

भोपाल राज्य पर चार बेगमों का शासन था।

कुदि सया बेगम –

समय सीमा – 1819 – 1837

18 साल की उम्र में कुद सया बेगम ने अपने पति नज़र मोहम्मद खान की मृत्यु के बाद भोपाल की सत्ता संभाली।

उन्हें गोहर बेगम के नाम से भी जाना जाता था। वह भोपाल की पहली महिला शा सका थीं। वह भोपाल पर शासन करने के लए पर्दा प्रणाली के खलाफ गईं,

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

जहां उन्होंने जल प्रबंधन के लए जर्मन इंजीनियर डे वस क्यूरू को नियुक्त कया।

उसने जामा मस्जिद (रेड सैंड स्टोन) और गोहर महल का निर्माण कया जिसे भोपाल में नज़र बाग भी कहा जाता है और हाज़ आगंतुकों के लए जगह है। उनकी बेटी सकंदर जहाँ का ववाह जहाँगीर मोहम्मद खान से हुआ था, जिनका क्विदिसा बेगम के साथ ववाद था।

1837-1844 तक, नजर मोहम्मद खान के भतीजे और कुदि सया बेगम के दामाद, जहांगीर मोहम्मद खान भोपाल की सीट पर चढ़े। उन्होंने 1835 में सीहोर हाई स्कूल की स्थापना की। बुंदेला वद्रोह के दौरान उन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया। 1844 में उनकी मृत्यु हो गई। अंग्रेजों ने मौके का फायदा उठाते हुए सकंदर जहां को भोपाल की अगली बेगम बनने का समर्थन कया।

सकंदर जहां बेगम -

समय सीमा – 1844 – 1868

सकंदर बेगम ने अपनी मां को भोपाल के शासक के रूप में उत्तरा धकारी बनाया ले कन अपने शासन के पहले तीन वर्षों के लए वह नाबा लग थी। अलेक्जेंडर कनिंघम ने उन्हें बेगमों के शासन में भोपाल राज्य का वास्त वक संस्थापक माना। 1857 के वद्रोह के दौरान उन्होंने अंग्रेजों का समर्थन कया।

उसने बनाया -

- मोती मस्जिद
- मोती महल
- टकसाल और खजाना
- आधुनिकीकृत न्यायालय

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

- मज लस-ए-शूरा
- टोल टैक्स स्टेशनों
- स्कूल
- सकंदरी प्रंटिंग प्रेस

उसने प्रशासनिक नियमों का ल खत प्रारूप तैयार कया। भोपाल में उनके शासनकाल को भोपाल रियासत का स्वर्ण काल माना जाता है।

शाहजहाँ बेगम –

समय सीमा – 1868 – 1901

वह सकंदर बेगम की उत्तरा धकारी थीं। उन्होंने पहले बाकी मोहम्मद खान से शादी की, जिनकी मृत्यु 1855 में हुई थी, बाद में उन्होंने सैय्यद सद्दीकी हसन से शादी की।

उसने भोपाल के आसपास के क्षेत्र में अपने नाम पर एक छोटा शहर शाहजहाँनाबाद बसाया। उसने अपने लए एक नया महल भी बनवाया - भोपाल में ताजमहल महल। यह ताज-उल-मस्जिद और लाल कोठी के बगल में स्थित है। उन्होंने गोहर-ए-इकबाल (एक उर्दू लेख) की रचना की। उन्होंने महिलाओं के लए एक बाजार खोला - परवीन बाजार, इसमें ज्यादातर रेशमी और सूती कपड़े शा मल थे।

- उन्होंने संह-ए-कोहारी खाद्य आपूर्ति वभाग की स्थापना की।
- शाहजहानी घाट, शाहजहानी सक्का, शाहजहानी प्रंटिंग प्रेस और शाहजहानी पुल (पुल)
- वक्टोरिया स्कूल और मदरसा-ए-बि ल क सया

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

- प्रंस ऑफ वेल्स और लांसडाउन अस्पताल
- भोपाल शहर का नक्शा
- तंजीमन-ए-शाहजहानी - न्याय वभाग

सुल्तान जहाँ बेगम –

समय सीमा – 1901 – 1926

वह शाहजहाँ बेगम की उत्तरा धकारी थीं।

उन्हें कैखुसौरो जहां बेगम और सरकार अम्मा के नाम से भी जाना जाता था। उनके शासनकाल के दौरान भोपाल राज्य आधुनिक युग के प्रकाश में चला गया।.

1904 में, उन्होंने मक्का का दौरा कया।
1909 में लॉर्ड मंटो भोपाल आए।
1911 में, उन्होंने दिल्ली दरबार में भाग लया।
1912 में लॉर्ड हा र्डग द् वतीय ने भोपाल का दौरा कया।

उन्होंने दफ्तर-ए-नानजीर - लेखा वभाग की स्थापना की। स्वास्थ्य सेवाओं के लए यूनानी च कत्सा वभाग।
वह अलीगढ़ मुस्लिम वश्व वद्यालय की पहली चांसलर थीं।
उन्होंने हमीदिया लाइब्रेरी और सुल्तानिया गर्ल्स स्कूल की स्थापना की।
उन्होंने आटा मलों, सूती मलों और चीनी मलों के साथ भोपाल का औद्योगीकरण कया।
शक्षा में उनके योगदान ने भोपाल को बगदाद-उल-हिंद कहा जाने लगा। उसने सदर मंजिल महल बनवाया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

उसके बाद उसका पुत्र नवाब हमीदुल्लाह खान गद्दी पर बैठा।

नवाब हमीदुल्लाह खान –
समय सीमा – 1926 – 1949

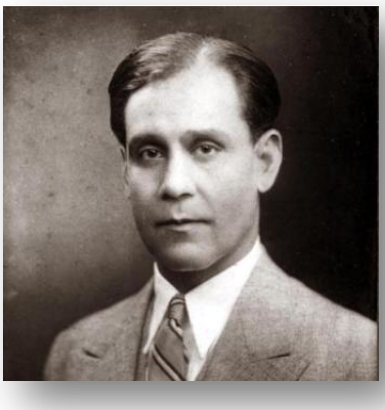

सुल्तान जहाँ बेगम के बेटे हमीदुल्लाह खान, एक उत्कृष्ट अंतरराष्ट्रीय पोलो खलाड़ी भोपाल के अगले नवाब थे।

वह चैंबर ऑफ प्रंस के स्थायी सदस्य थे।

उन्होंने हमीदिया कला और वा णज्य इंटर कॉलेज की स्थापना की।

1 जून 1949 को, भोपाल की रियासत ने परिग्रहण के साधन पर हस्ताक्षर कए और स्वतंत्र भारत का हिस्सा बन गई।

परिग्रहण के साधन पर हस्ताक्षर –

भारत को आजादी मलने के बाद नवाब हमीदुल्ला खान ने स्वतंत्र रहना चुना। वह हिंदू बहुसंख्यक आबादी वाले राज्य के मुस्लिम राजकुमार थे। इस प्रकार, भोपाल की सड़कों पर वद्रोह शुरू हो गया।

सरकार ने वद्रोह को दबाने की को शश की ले कन वह उत्तेजित हो गया।

सरदार पटेल ने वी.पी. मेनन को कार्यभार संभालने और वद्रोह को शांत करने का आदेश दिया।

वीपी मेनन ने नवाब हमीदुल्ला पर वलय पत्र पर हस्ताक्षर करने का दबाव डाला।

1 जून 1949 को नवाब ने स्वीकृति दे दी और भोपाल को भारत में मला लया गया।

RAO'S ACA for Competitiv (A unit of RAO

बेगम सुल्तान जहाँ के बेटे हमीदुल्लाह खान के तीन बच्चे थे। उनकी दूसरी सबसे बड़ी बेटी साजिदा सुल्तान का ववाह पटौदी परिवार के 8वें नवाब इफ्तिखार अली खान से हुआ था। उनका एक बेटा, मंसूर अली खान पटौदी था, जो प्र सद्ध क्रकेटर था, जिसने भारतीय

Sajida Sultan, the last titular Begum of Bhopal

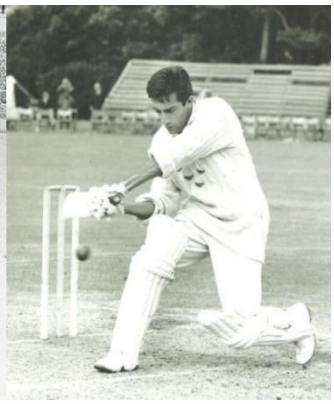

अभनेत्री और रवींद्रनाथ टैगोर के वंशज, सुश्री शर्मिला टैगोर, बेटे सैफ अली खान से शादी की थी।

भोपाल राज्य की कला और वास्तुकला –

सं.क्र.	स्मारकों	शासक
1.	फतेहगढ़ कला, ढाई सदी मस्जिद	दोस्त मो. खान
2.	जामा मस्जिद, गोहर मस्जिद	क्विदि सया बेगम
3.	मोती मस्जिद, मोती महल, शौक़ाल महल	सकंदर जहां बेगम
4.	नूरबाग मस्जिद, जहांगीराबाद	जहांगीर मोहम्मद
5.	ताजुल मस्जिद, लाल कोठी, भोपाल का ताजमहल	शाहजहां बेगम
6.	सोफया कॉलेज (कैसर-ए-सुल्तानी महल), अहमदाबाद महल, नूर-उस-सभा महल, कंग एडवर्ड संग्रहालय	सुल्तान जहाँ बेगम

भोपाल राज्य में साहित्य –

नवाबों और बेगमों के शासन काल में भोपाल में उर्दू साहित्य का वकास सर्वप्रथम देखा गया।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

सं.क्र.	शासक	लखें
1	जहांगीर मो.	दीवान-ए-इल्हा, ताज-उल-कमल, दीवान-ए-शायरीन, सद्दीक़ी-उल-बयान
2	सहजन बेगम	ताज-उल-इकबाल, गोहर-ए-इकबाल
3	सुल्तान जनन बेगम	हयात-ए-बकी, हयात-ए-कुरसी

अन्य वकास –

भोपाल रियासत में वक़ील-ए-रियासत नाम का लोक कल्याण वभाग शा मल था।

1857 के वद्रोह में योगदान देने वाले भोपाल के स्वतंत्रता सेनानी
• आदिल मो. खान • फा सल मोहम्मद खान • अमानत खान • अ मल खान • महावीर, वलीशाह • सुजात खान

- होलकर वंश (होलकरों की रियासत)

संस्थापक – मल्हार राव होल्कर

यह राजवंश प्रारंभ में मराठा साम्राज्य की एक शाखा थी। होल्कर नाम की उत्प त्त पुना के आसपास के क्षेत्र में होल्गाँव से हुई है।

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद, 1720-40 पेशवा बाजीराव । वस्तार नीति और कर संग्रह (चौथ) ने मराठों को मालवा के क्षेत्र पर आक्रमण करने के लए प्रेरित कया।

1723 में, पेशवा बाजीराव प्रथम ने मल्हार राव होल्कर के साथ असीरगढ़ कले से मालवा में प्रवेश कया।

मई, 1723 में पेशवा ने भोपाल के दोस्त मोहम्मद खान को हराया।

दिसंबर, 1723 में छत्रसाल की मदद से पेशवा ने मुहम्मद खान बंगश को हराया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

1724 में, सारंगपुर की लड़ाई मुगल और मराठा सेना के बीच लड़ी गई थी। मल्हार राव होल्कर ने चमनजी अप्पा के साथ मलकर मुगल अधीक्षक - गरधर बहादुर को हराया।

1728 में, अमझेरा की लड़ाई लड़ी गई, जिसमें चमनजी अप्पा, मल्हार राव होल्कर और रानोजी सं धया ने (मुगलों) दया बहादुर और गरधर बहादुर को हराया। इस जीत के साथ मराठों ने मालवा क्षेत्र पर अपना अ धकार स्था पत कर लया।

1731 में, तिरला की लड़ाई लड़ी गई, मराठा वजयी हुए और दया बहादुर मारे गए।

जुलाई, 1732 में पेशवा बाजीराव ने मालवा के क्षेत्र को पाँच प्रा धकरणों के अधीन वभाजित कर दिया। जिनमें से होल्कर द क्षणी मालवा में और सं धया उत्तरी मालवा में थे।

मल्हार राव होलकर –

समय सीमा – 1731 – 1766

वह एक योग्य सेनापति और होलकर वंश का संस्थापक था। उनके पता का नाम खंडूजी होल्कर था। अपने पता की मृत्यु के बाद, मल्हार राव मराठों की सेना में शा मल हो गए।

उनकी पत्नियाँ – गौतमी बाई, द्वारका बाई, बाना बाई और हरकु बाई।

उनके बेटे और बहू - खंडेराव होल्कर और अहिल्या बाई होल्कर।

उन्होंने सारंगपुर (1724), अमझेरा (1728), तिरला (1731) की लड़ाई में भाग लया।

1731 में, उन्होंने बाजीराव प्रथम की भी सहायता की जब उन्होंने दिल्ली पर आक्रमण कया।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

1737 में, उन्होंने भोपाल की लड़ाई और दोरसराय की सं ध में भाग लया।
1752 में भालमी मुकाम का युद्ध मराठा और निजाम के बीच लड़ा गया था।
1754 में, उनके बेटे खंडेराव होल्कर ने जाट नेता सूरज मल के खलाफ एक अ भयान चलाया। उनकी सेना ने कुम्भेर कले पर कब्जा कर लया ले कन निरीक्षण के दौरान एक तोप का गोला उनके श वर पर लगने से खांडेराव की मृत्यु हो गई।
1761 में, पानीपत की तीसरी लड़ाई में, उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से मराठों का समर्थन कया।
1764 में, उन्होंने अंग्रेजों के खलाफ सुजा-उद-दौला की सहायता की।
उन्होंने इंदौर और मल्हारगंज में राजवाड़ा की स्थापना की।

20 मई, 1766 को उनकी मृत्यु हो गई और उनकी समा ध आलमपुर, भंड में है।

मालेराव होल्कर –

समय सीमा – 1766 – 1767

वह खंडेराव और अहिल्या बाई के पुत्र थे। वह नाबा लग था जब उसके पता की मृत्यु हो गई इस प्रकार उसकी मां संरक्षक शासक बन गई ले कन अप्रैल, 1767 में एन्सेफलाइटिस (मस्तिष्क की सूजन) के कारण मलेराव की मृत्यु हो गई।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

अहिल्याबाई होल्कर –

समय सीमा – 1767 – 1795

वह सबसे महान होलकर शासक और खांडेराव होलकर की पत्नी थीं। वह मल्हेराव होल्कर और मुक्ता बाई की माँ थीं। अपने पति (1754), ससुर (1766) और पुत्र

(1767) की मृत्यु के बाद, वह संहासन पर बैठी। राजधानी के साथ- महेश्वर

उसने अपनी क्षमता सद्ध की; एक रानी होने के नाते उन्होंने कई मानवीय कार्य कए जैसे –

- तालाबों, कुओं, हॉ लंग स्टेशनों, स्कूलों, अस्पतालों आदि का निर्माण।
- उन्हें महेश्वर साड़ी का व्यापार संस्थापक माना जाता है।
- उन्होंने छत्रीबाग में जनसुनवाई की।
- उसने गुजरात के सोमनाथ मंदिर और काशी के वश्वनाथ मंदिर की मरम्मत की।
- उसने बनारस में अन्नपूर्णा मंदिर और म णक र्णका घाट, महेश्वर कला और खरगोन में घाट का निर्माण कराया।

उनके योगदान को याद करने के लए मध्य प्रदेश सरकार ने निम्न ल खत कार्य कया –

- इंदौर हवाई अड्डा - देवी अहिल्या बाई होल्कर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
- इंदौर वश्व वद्यालय - देवी अहिल्याबाई वश्व वद्यालय (DAVV)
- अहिल्या बाई पुरस्कार
- अहिल्या उत्सव

डॉ. हीरालाल शर्मा कहते हैं क उनका शासन काल सुशासन का काल था।

for Competitive Exams
(A unit of RACE)

तुकोजीराव होलकर –

समय सीमा – 1795 – 1797

वह मल्हार राव के दत्तक पुत्र और रानी अहिल्या बाई के सेनापति थे। उसने राजधानी को महेश्वर से इंदौर स्थानान्तरित कया। उनकी सेना आधुनिक सेना के यूरोपीय मॉडल पर आधारित थी।

1779 में, प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध - वडगाँव की लड़ाई के दौरान, उन्होंने नाना फडणवीस के साथ कर्नल गोडार्ड और टीपू सुल्तान (1785) को कड़ा प्रतिरोध दिया।

1794 में, तुकोजीराव ने निज़ाम की सेना को हराने में पेशवाओं की मदद की।

1797 में तुकोजीजराव की मृत्यु हो गई, और उनके बेटे काशीराव होल्कर (1797-99) ने पेशवा और दौलतराव सं धया की मदद से उनका उत्तरा धकार कया। बाद में उन्हें यशवंतराव होलकर ने वस्था पत कर दिया।

यशवंतराव होलकर –

समय सीमा – 1799- 1811

वह तुकोजीराव के पुत्र थे, जो एक सक्षम सेनापति और गोरिल्ला युद्ध में वशेषज्ञ थे। उन्होंने राजधानी को इंदौर से भानपुरा स्थानान्तरित कया। उसने हिंगलाजगर्थ के कले को छावनी में बदल दिया।

1799 में, कसरावद की लड़ाई में यशवंतराव ने काशीराव होल्कर को हराया, इस जीत के साथ उन्होंने उज्जैन के क्षेत्र पर कब्जा कर लया और काशीराव को वस्था पत कर दिया गया।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

इसके बाद होल्कर और सं धया के बीच तनाव पैदा हो गया जो अंततः उज्जैन की लड़ाई के साथ समाप्त हुआ, जिसमें सं धया की हार हुई।

1801 में, यशवंतराव होलकर ने हदसपुर की लड़ाई में पेशवाओं को भी हराया। 1802 में, पेशवा ने होल्कर पर अपना अ धकार बहाल करने के लए अंग्रेजों के साथ बे सन की सं ध पर हस्ताक्षर कए। {इससे द् वतीय आंग्ल-मराठा युद्ध हुआ}।

1803-05 में, यशवंतराव की शक्ति बढ़ी और अंग्रेजों ने उन पर हमला करने की योजना बनाई। इसके साथ कुंच का युद्ध बुंदेलखंड में यशवंतराव और कर्नल फावसेट (पराजित) के बीच लड़ा गया।

यशवंतराव की जीत ने उन्हें शाह आलम द् वतीय को मुक्त करने के लए दिल्ली की ओर मार्च करने के लए प्रेरित कया। आभार व्यक्त करते हुए शाह आलम द् वतीय ने यशवंतराव होलकर को "राजराजेश्वर अलीजा बहादुर" की उपा ध प्रदान की।

1804 में, सं धया ने यशवंतराव होल्कर के साथ बुरहानपुर की सं ध पर हस्ताक्षर कए।

1805 में, उन्होंने अंग्रेजों के साथ राजपुरघाट की सं ध पर हस्ताक्षर कए।

उन्होंने निर्माण कया- महेश्वर में अहिल्या मंदिर और वठोजी, खंडेराव, लक्ष्मीबाई छत्री। उसने हिंगलाजगर्थ कले का जीर्णोद्धार कराया।

इतिहासकार के अनुसार- एन.एस. इनामदार, यशवंतराव होल्कर को "मध्य भारत का नेपो लयन" कहा जाता है

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

मल्हारराव होलकर तृतीय –

समय सीमा –1811 – 1833

वे यशवंतराव होलकर और कृष्णाबाई के पुत्र थे। 1811 में अपने पता की मृत्यु के बाद, वह तुलसाबाई के संरक्षक के अधीन संहासन पर चढ़ा और राजधानी को इंदौर में स्थानांतरित कर दिया।

दिसंबर 1817 में, तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, उन्होंने महिदपुर की लड़ाई लड़ी। अब्दुल गफ्फार के वश्वासघात के कारण मल्हारराव होलकर तृतीय की हार हुई। उन्होंने 1818 में मंदसौर की सं ध पर हस्ताक्षर कए।

इसके साथ होलकर की रियासत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन आ गई।

1833 से 1844 तक मार्तण्ड होलकर, हरिराव होलकर, खांडेराव तृतीय शासक रहे।

उन्होंने इंदौर में पुराना महल और पद्रीनाथ मंदिर और अंग्रेजों के लए मऊ छावनी का निर्माण कराया।

तुकोजीराव होलकर द् वतीय –

समय सीमा –1844 - 1886

वह एक सक्षम शासक था, जिसने इंदौर में कई रचनात्मक कार्य कए। उन्होंने कई आ थक सुधार लाने वाले टी. माधवराव को इंदौर का दीवान नियुक्त कया। इंदौर के औद्योगीकरण का श्रेय तुकोजीराव द् वतीय को जाता है। 1857 का वद्रोह इनके शासनकाल में हुआ था। वद्रोह में उनकी भू मका

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

उन्होंने सीधे तौर पर अंग्रेजों का समर्थन कया।

- कर्नल डूरंड इंदौर में।
- धार में कर्नल है चंसन।

उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन कया।

- सआदत खान सैन्य सहायता और उनके परिवार के सदस्यों की सुरक्षा।

1867 में, स्टेट क्लॉथ मल की स्थापना की गई थी।

1875 में, इंदौर-खंडवा रेलवे लाइन स्था पत की गई थी।

1876 में प्रंस ऑफ वेल्स ने इंदौर का दौरा कया।

1877 में, उन्होंने दिल्ली दरबार में भाग लया।

शवाजीराव होल्कर –

समय सीमा –1886- 1903

वह तुकोजी द् वतीय का दूसरा पुत्र था। उन्होंने आर. रघुनाथ को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कया।

1889 में, उन्होंने इंदौर में एक तकनीकी संस्थान, होलकर कॉलेज (1891) और संस्कृत स्कूल की स्थापना की।

उन्होंने भी निर्माण कया- लाल बाग महल, दरियाब महल, शव- वलास महल, सुख महल और तुकोजीराव अस्पताल।

तुकोजीराव होलकर तृतीय –

समय सीमा – 1903- 1926

वह शवाजीराव होल्कर के पुत्र थे।

उनका योगदान-

- हुकुमचंद मल, अहिल्या आश्रम, चंद्रावती महिला वद्यालय।
- इंदौर में टाउन हॉल का उद्घाटन जॉर्ज पंचम ने कया।
- नवरतन मंदिर (1923), वर्तमान में इसे सेंट्रल आर्काइव के नाम से जाना जाता है।
- पपल्या में कृ ष अनुसंधान केंद्र

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

मालाबार हिल वध- यह एक घटना थी जो बंबई में हुई थी, एक दंपति की हत्या कर दी गई थी और तुकोजीराव III पर हत्या का आरोप लगाया गया था, जिसके कारण उन्हें सत्ताधारी पद से इस्तीफा देना पड़ा था। उनका स्थान यशवंतराव होलकर द्वतीय ने लया।

यशवंतराव होलकर द्वतीय –

समय सीमा – 1926- 1948

उनके वकास कार्यों के कारण उन्हें "आधुनिक इंदौर के वास्तुकार" के रूप में जाना जाता है।

उन्होंने इंदौर एयरपोर्ट, एमवाय अस्पताल, यशवंत सागर झील, क्रकेट टीम बनवाई।

1 जनवरी 1950 को, यशवंतराव III ने परिग्रहण के साधन पर हस्ताक्षर कए और इंदौर की रियासत संयुक्त भारत का हिस्सा बन गई।

सं धया राजवंश (सं धया की रियासत)

संस्थापक– राणोजी सं धया

राजधानी- उज्जैन, बाद में ग्वा लयर

समय अव ध- 1731- 1948

सं धया वंश कुनबी मूल का हिन्दू मराठा वंश है। यह मध्य भारत की सबसे प्रमुख रियासतों में से एक है।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

रानोजी सं धया –

समय अव ध – 1731- 1745

शुरुआत में, वह पेशवा बालाजी वश्वनाथ के संरक्षण में थे।

1728 में अमझेरा की लड़ाई दयाबहादुर और गरधरबहादुर के खलाफ मराठा संघ के बीच लड़ी गई, जिसके बाद उन्हें मालवा के उत्तरी क्षेत्र पर कर एकत्र करने का अ धकार मला।

1732 ई. में उसने शाजापुर, शुजालपुर और उज्जैन को प्रारं भक राजधानी के रूप में आ धपत्य प्राप्त कर लया।

उन्होंने उज्जैन के महाकाल मंदिर का जीर्णोद्धार कराया; संहस्थ कुंभ को फर से शुरू कया गया और दिल्ली हमले के दौरान बाजीराव प्रथम की सहायता की।

राणोजी के 5 पुत्र थे- जयअप्पाराजे सं धया, दत्ताजी सं धया और जोतिभा वैध उत्तरा धकारी थे। वहीं महादजी और तुकाजी सं धया नाजायज थे.

जयप्पाराजे सं धया –

समय अव ध – 1745- 1755

वे राणोजी सं धया के सबसे बड़े पुत्र थे। उन्हें एक अन्य नाम से भी जाना जाता था- जयाजीराव सं धया। मारवाड़ के महाराज वजय संह ने 1755 में उनकी हत्या कर दी और उनके पुत्र जानकोजी सं धया संहासन पर चढ़े।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

जानकोजीराव सं धया –

समय अव ध –1755 – 1761

वह जयप्पाराजे सं धया के पुत्र थे; वह नाबा लग था जब उसके पता की मृत्यु हो गई। इस प्रकार उनके चाचा दत्ताजी सं धया उनके संरक्षक बन गए। दत्ताजी ने अपने भाई की मृत्यु का बदला लया और वजय संह को हराया; उसने आगरा और अजमेर का भी अ धग्रहण कया ले कन 1760 में उसे नजीब खान ने मार डाला।

1761 में, पानीपत की तीसरी लड़ाई में जानकोजीराव की मृत्यु हो गई।

जानकोजी की मृत्यु के बाद, 1763-64 में कादरजीराव और 1764-68 में मंजीराव सं धया की तुलना में गद्दी पर बैठने वाला कोई नहीं था।

महादजी सं धया –

समय अव ध –1768 – 1794.

उन्हें सं धया वंश का वास्त वक संस्थापक और सबसे प्र सद्ध शासक माना जाता है। उन्हें माधवराव प्रथम और द् वतीय शवाजी के नाम से भी जाना जाता है।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A Unit of RAAE)

1761 में, पानीपत की लड़ाई के दौरान वह घायल हो गया था और जल वाहक (भस्ती) द्वारा बचाया गया था जिसका नाम- शेन खा था।

1765 में, उन्होंने जाट राजा- लोकेंद्र संह को हराकर ग्वा लयर के कले पर वजय प्राप्त की।

1772 में, उन्होंने शाह आलम द् वतीय की सहायता की, जिसके लए उन्होंने महादजी को "नायब वकील" की उपा ध दी।

1788 में गुलाम कादिर का वद्रोह हुआ।

1793 में, लखेरी की लड़ाई महादजी और तुकोजीराव होल्कर (हार) के बीच लड़ी गई थी। हालाँक उन्होंने लड़ाई जीत ली ले कन इस गृहयुद्ध से परेशान थे और इसे "शोक दिवस" कहा।

महादजी ने फ्रांसीसी अ धकारी- देवौन की देखरेख में अपनी सेना की स्थापना की।

उन्होंने बुरहानपुर में राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण कया और ग्वा लयर कले की मरम्मत की।

1794 ई. में (बनवाड़ी) पूना में उनकी मृत्यु हो गई।

दौलतराव सं धया –

समय अव ध – 1794- 1827

वे महादजी सं धया के भतीजे थे।

1797 में उसने कुदरला के युद्ध में निजाम को हराया।

1801 में, उज्जैन की लड़ाई में यशवंतराव होलकर ने उन्हें हराया था।

1802 में, हदसपुर की लड़ाई में होल्कर शासक द्वारा उसे पराजित कया गया था।

उन्होंने द् वतीय आंग्ल-मराठा युद्ध में हारने के बाद अंग्रेजों के साथ सुरजी-अंजनगांव (1803) की सं ध पर हस्ताक्षर कए। (सं धया के दरबार में ब्रिटिश रीजेंट)

1804 में, अंग्रेजों के साथ बुरहानपुर की सं ध पर हस्ताक्षर कए गए थे। (सं धया की लड़ाई में अंग्रेजों की सहायता के लए)

1810 में, उन्होंने राजधानी को उज्जैन से ग्वा लयर स्थानांतरित कर दिया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

18177 में, उन्होंने अंग्रेजों के साथ ग्वा लयर की सं ध पर हस्ताक्षर कए। (पंडारी समाधान)

उन्होंने ग्वा लयर में लश्करनगर, फूलबाग, मोती महल और महाराजवाड़ा की स्थापना की।

प्र सद्ध क व पद्माकर उनके दरबारी थे।

जानकोजी सं धया द् वतीय –

समय अव ध – 1827 – 1843

मुकुटराव शंदे (मूल नाम) दौलतराव के दत्तक पुत्र थे। वह बैजा बाई (पालक माँ) के संरक्षण में शासक बन जाता है। बाद में जानकोजी ने अपना स्वतंत्र राज्य स्था पत करने के लए व लयम बेंटिक से सहायता मांगी और बैजाबाई को उज्जैन भेज दिया गया।

1843 में उनकी मृत्यु हो गई।

बैजा बाई- वह दौलतराव सं धया द् वतीय की पत्नी थीं, जो अपने दत्तक पुत्र के संरक्षक शासक बने।
ठगों के खात्मे में कर्नल स्लीमैन और मैक्लोयड उसकी मदद करते हैं।
उसने बनारस में सं धया घाट और ग्वा लयर में बैज ताल का निर्माण कया।
अपने व्यापार को ग्वा लयर से दूर रखने के लए उन्हें 1832 में उज्जैन भेजा गया था।
वह 1857 में लौटीं और अंग्रेजों के खलाफ उपायों को अपनाया।
मृत्यु- 1863

जयाजीराव सं धया –

समय अव ध – 1843 - 1886

उनका मूल नाम भागीरथ शंदे था। वह जानकोजी द् वतीय का दत्तक पुत्र था। वह कृष्णराव और ताराबाई के संरक्षण में था।

1851 में उन्होंने दिनकर राव को अपना दीवान नियुक्त कया।

जय वलास पैलेस, जल वहार, कुंप कोठी, राजमहल तालाब, गोरखी गेट का निर्माण उन्होंने ही करवाया था।

ग्वा लयर संगीत घराने का उदय उन्हीं के शासनकाल में प्र सद्ध तबला वादक-जोरव संह उनके दरबार में हुआ था।

1857 का वद्रोह उनके शासनकाल के दौरान हुआ जिसमें उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों का समर्थन कया और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की सहायता की।

<u>अमरचंद बाठिया-</u>

वह जयाजीराव के कोषाध्यक्ष थे, उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता सेनानी को आश्रय दिया और गेट पर ताला लगा दिया और रानीलक्ष्मी बाई को चाबी दे दी।

देशद्रोह के इस कृत्य के लए उन्हें फांसी दे दी गई।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RASE)

जय वलास पैलेस- यह सं धया का आवासीय घर है, जो जयाजीराव के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। इसके वास्तुकार थे- सर माइकल फलोज।

माधोराव सं धया –

समय अव ध – 1886- 1925

वह जयाजीराव और जीजाबाई के पुत्र थे। उनका प्रारं भक 8 वर्ष का शासन रेजिडेंसी परिषद (ब्रिटिश) के अधीन था।

उनका स्वतंत्र शासन 1896 से 1925 तक शुरू होता है।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

उन्होंने प्रगतिशील प्रशासन के लए ग्वा लयर सरकार का गठन कया और पारद र्शता के लए दो वभाग स्था पत कए-

मज लस-ए-आम, मज लस-ए-खास।

1897 में ग्वा लयर कले के अंदर सं धया स्कूल की स्थापना की गई थी।

ग्वा लयर में वक्टोरिया कॉलेज की स्थापना की। (वर्तमान नाम- रानी लक्ष्मीबाई कॉलेज)

1911 में जॉर्ज पंचम की यात्रा के लए शवपुरी में जॉर्ज कैसल बनाया गया था।

उन्होंने माधव वलास का निर्माण कया और शवपुरी को ग्वा लयर राज्य की शीतकालीन राजधानी घो षत कया।

उन्होंने सडनी प्रेस्टन के नियोजन-पर्यवेक्षण में संचाई के लए एक वभाग खोला।

हरसी, तिगरा और काकातो बांधों का निर्माण कया गया।

1904 में, ग्वा लयर-श्योपुर नैरो गेज ट्रेन को रखा गया और ग्वा लयर इंजीनियरिंग कार्यों के साथ शुरू कया गया।

जयाजी कॉटन मल और बानमोर सीमेंट फैक्ट्री की स्थापना की गई।

जून 1925 को पेरिस में उनका निधन हो गया।

जीवाजीराव सं धया –

समय अव ध – 1925 – 1948

उन्हें सं धया वंश का अंतिम शासक माना जाता है। वह नाबा लग था जब उसके पता की मृत्यु हो गई, इस प्रकार पहले रेजिडेंसी परिषद और बाद में महारानी चनुकराजे उसकी संरक्षक थीं।

उन्होंने लेखा दिव्येश्वरी/वजया राजे या ग्वा लयर की राजमाता से ववाह कया।

वह मध्य भारत के पहले राजप्रमुख थे।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

1946 में, उन्होंने ग्वा लयर में गजरा राजे मे डकल कॉलेज, माधव इंजीनियरिंग कॉलेज, कमला राजे कॉलेज की स्थापना की।

उनके शासनकाल के दौरान ग्वा लयर को भारत में वलय कर दिया गया (15 जून 1948)।

उनकी 4 बेटियां थीं और माधव राव सं धया उनके बेटे थे, वे ज्योतिरादित्य सं धया के दादा थे।

for Competitive Exams
(A unit of RACE)

मध्य प्रदेश का आधुनिक इतिहास

- चैन संह का वद्रोह
- 1857 का वद्रोह
- झंडा सत्याग्रह
- जंगल सत्याग्रह

Early Movements

- 1842 का बुंदेला वद्रोह
- मप्र में असहयोग आंदोलन
- मप्र में स वनय अवज्ञा आंदोलन

Later Movements

- चरणपादुका नरसंहार
- मप्र में भारत छोड़ो आंदोलन
- प्रमुख हस्तियां
  - स्वतंत्रता सेनानी
  - आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी
- अन्य ऐतिहा सक घटनाएँ
  1. पंजाब मेल हादसा
  2. सोहाबल नरसंहार
  3. कांग्रेस का त्रिपुरी अ धवेशन
  4. भोपाल की ज लयावाला घटना
  5. रीवा का धान वद्रोह
  6. सराफा घटना
  7. अंजुमन-खुद्दाम-ए-वतन
  8. प्रजा मंडल
  9. स्त्री सेवादल
  10. कसाई खाना कांड

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

चैन संह का वद्रोह –

वह नर संहगढ़ (राजगढ़) रियासत के आर्कड्यूक थे। उन्हें मध्य प्रदेश का पहला शहीद और एमपी का मंगल पांडेय माना जाता है।

उन्होंने नर संहगढ़ के ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट - मेडोक, चैन संह के आदेशों की अवहेलना करते हुए

अपने अंगरक्षक हिम्मत खा और बहादुर खा के साथ सीहोर में मेडोक के साथ युद्ध कया।

24 जून 1824 को दशहरा मैदान में उन्हें शहादत मली थी।

मध्य प्रदेश सरकार ने कुंवर चैन संह, सीहोर की छत्रछाया पर वर्ष 2015 से गार्ड ऑफ ऑनर शुरू कया है।

1842 का बुंदेला वद्रोह –

8 अप्रैल 1842 ई. को यह वद्रोह सागर, दमोह तथा नर संहपुर आदि क्षेत्रों में हुआ। यह 1857 के वद्रोह की प्रस्तावना थी।

वद्रोह का कारण –

- जबरदस्ती और करों की उच्च दर।
- रियासतों के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश भागीदारी।
- अंग्रेजों की भ्रष्टाचार, बांटो और राज करो की नीति।
- केवल भारतीयों के लए लाइसेंसशुदा बंदूकें ले जाने की प्रथा को समाप्त करना।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

तत्काल कारण - गुड़ा के राजकुमार वक्रमजीत के दरबार से अंग्रेजों द्वारा झुकनिया (नर्तकी) का अपहरण।

8 अप्रैल, 1842 को मधुकर शाह, गणेश जू, जवाहर संह बुंदेला ने वद्रोह की शुरुआत की और बुंदेलखंड क्षेत्र के स्वतंत्र वद्रोह के तुरंत बाद वद्रोह में भाग लया –

सं.क्र.	वद्रोह के नेता	वद्रोह का क्षेत्र
1	मधुकर शाह	नरहुत
2	गणेश जू	नरहुत
3	जवाहर बुंदेला	चंद्रपुर
4	राजा परी क्षत	जैतपुरा
5	हृदय शाह	हीरापुर
6	वक्रमजीत संह	गुडा
7	मोर प्रह्लाद	चंदेरी
8	बखत संह	चरगांव
9	ढिल्लन शाह	मदनपुरा

वद्रोह का दमन –

अंग्रेजों ने इस वद्रोह को दबाने के लए फूट डालो और राज करो की अपनी सबसे प्र सद्ध नीति का प्रयोग कया –

- शाहगढ़ के बखतबली ने अंग्रेजों को मदनपुरा ढिल्लनशाह के गोंड शासक को पकड़ने में मदद की।
- जून 1843 में, जवाहर संह बुंदेला ने है मल्टन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।
- दिसंबर 1843 में गणेश जू ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- बखतबली ने है मल्टन को हृदय शाह के बारे में बताया और चरखारी के रतन संह ने जैतपुरा के राजा परी क्षत को पकड़ने में मदद की।

वद्रोह का परिणाम और महत्व –

- करों में 10% की छूट पर सहमति बनी।
- भ्रष्ट अ धकारियों का तबादला कर दिया गया और नए अ धकारियों की नियुक्ति की गई।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

हालां क इस वद्रोह को दबा दिया गया और असफल साबित हुआ ले कन इसने 1857 के वद्रोह की भू मका तैयार की।

मध्य प्रदेश में 1857 का वद्रोह

मई, 1857 में मेरठ छावनी से शुरू हुआ वद्रोह मध्य प्रदेश के व भन्न हिस्सों में भी फैल गया।

वद्रोह का कारण –

- अंग्रेजों के अत्याचार
- उजागर आ र्थक नीतियां
- भ्रष्टाचार, बांटो और राज करो
- रियासतों के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश भागीदारी
- सहायक गठबंधन की नीति और चूक का सद्धांत।

नाना साहेब और तात्या टोपे ने जनता को जागरूक करने के लए मप्र में कमल के फूल और भारतीय चपटी (रोटी) का प्रतीक बनाया।

वद्रोह की शुरुआत –

- 1857 में पहली कार्रवाई नीमच छावनी से वद्रोह था। 3 जून, 1857 को नीमच छावनी के सपाहियों ने ब्रिटिश अ धकारियों का आदेश मानने से इंकार कर दिया। कर्नल सी बी सोबर्स ने इस वद्रोह को दबा दिया और ब्रिटिश सत्ता को बहाल कर दिया।
- दूसरी कार्रवाई 14 जून, 1857 को ग्वा लयर छावनी में हुई। इस दौरान जयाजी राव सं धया ने प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों की सहायता की और अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन कया। उसने अपने परिवार के सदस्य को भी आगरा भेज दिया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

- 20 जून, 1857 को तीसरी कार्रवाई शवपुरी में हुई।

1857 के वद्रोह में मध्य प्रदेश के नेता –

- सआदत खा - वह होलकर की सेना में गनमैन था। 1 जुलाई, 1857 को भागीरथ सलावट के साथ सआदत खा ने इंदौर रेजीडेंसी में प्रतिरोध कया। उन्होंने महू से मार्च का नेतृत्व कया ले कन इस वद्रोह को ब्रिगे डयर स्टुअर्ट ने दबा दिया। 1874 में, उन्हें बसवाड़ा से पकड़ लया गया और 1 अक्टूबर, 1874 को उन्हें मृत्युदंड दिया गया। उनकी समा ध इंदौर में एमपीपीएससी कार्यालय के सामने स्थित है।
- शंकरशाह और रघुनाथशाह - पता-पुत्र की जोड़ी ने महाकौशल क्षेत्र से वद्रोह का नेतृत्व कया। उन्होंने 8 सतंबर, 1858 को अंग्रेजों के खलाफ पाटन और बरगी की लड़ाई लड़ी, उन्हें अंग्रेजों ने पकड़ लया और मार डाला।
- भक्तबली - उसने शारगढ़, सागर से वद्रोह का नेतृत्व कया। उन्होंने अपने सेनापति बोधन दौआ के साथ मलकर अंग्रेजों का कड़ा प्रतिरोध कया।
- मर्दन संह - उसने बानपुरा से वद्रोह का नेतृत्व कया और अंग्रेजों को कड़ा प्रतिरोध दिया।
- टंट्या भील - वह एक आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी थे, जो निमाड़ क्षेत्र से ताल्लुक रखते थे और गोरिल्ला युद्ध में अग्रणी थे। उन्हें 1889 में मृत्युदंड दिया गया था।
- भीमा नायक - उन्होंने सेंधवा, बड़वानी से वद्रोह का नेतृत्व कया। उन्होंने ख्वाजा नायक के साथ मलकर अंग्रेजों का कड़ा प्रतिरोध कया। उन्होंने बड़वानी के पानसेमल क्षेत्र को लूटा और अंग्रेजों के खलाफ अंबापानी की लड़ाई लड़ी। 29 दिसंबर, 1876 को उनकी मृत्यु हो गई।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

- ख्वाजा नायक - इन्होंने निमाड़ क्षेत्र में वद्रोह का नेतृत्व कया। उनके साथ भीमा नायक भी थे।
- अवंती बाई - ये जबलपुर के रामगढ़ की महारानी थीं। उन्होंने अपने अंगरक्षक गरधारी बाई के साथ मलकर अंग्रेजों का कड़ा प्रतिरोध कया। नवंबर, 1857 में उन्होंने खीरी की लड़ाई लड़ी और मार्च, 1858 में देवहरगढ़ संघर्ष में अंग्रेजों के खलाफ खड़ी हुईं। 20 मार्च, 1858 को वह गरधारी बाई के साथ ब्रिटिश सेना से घिर गईं और दोनों ने अपनी जान लेने का फैसला कया।
- ठाकुर सूरज प्रसाद - इन्होंने कटनी के वजयराघवगढ़ क्षेत्र में वद्रोह का नेतृत्व कया।
- फ़ाज़िल मो. खान – वह अंबापानी का जमींदार था। उन्होंने अपने भाई आदिल मोहम्मद खा के साथ मलकर अंग्रेजों का कड़ा प्रतिरोध कया। अक्टूबर, 1857 में दोनों भाइयों ने अंग्रेजों के खलाफ बम्होरी की लड़ाई लड़ी, इस लड़ाई में फाजिल के सेनापति भीकम संह की मृत्यु हो गई। बाद में उन्हें भी पकड़ लया गया और मृत्युदंड मला।
- लक्ष्मीबाई - वह झाँसी की रानी थीं। उन्होंने झांसी से कालपी, ग्वा लयर तक वद्रोह का नेतृत्व कया। 1857 के वद्रोह में, उसने जनरल ह्यूग रोज़ के खलाफ और अपने साम्राज्य को चूक के सद्धांत से बचाने के लए लड़ाई लड़ी। उन्होंने अंग्रेजों का कड़ा प्रतिरोध कया और 18 जून, 1858 को शहादत प्राप्त की।
- झलकारी बाई - वह रानी लक्ष्मीबाई की अंगरक्षक थीं। जब उन्हें पता चला क उनके साथ वश्वासघात कया गया है और अंग्रेज उन्हें पकड़ने आ रहे हैं तो उन्होंने लक्ष्मी बाई से अपनी जान बचाने का आग्रह कया और उन्होंने अंग्रेजों के सामने खुद को रानी लक्ष्मी बाई के रूप में चत्रित कया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

- अमरचन्द्र बाठिया – ये सं धया शासकों के खजाने थे। 1857 के वद्रोह के दौरान जब वह ग्वा लयर पहुंचीं तो उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई की सहायता की। रानी लक्ष्मी बाई को सहायता प्रदान करने के लए अंग्रेजों ने उन्हें कैद कर लया और उन्हें मृत्युदंड दिया गया।
- तात्या टोपे - वे उन संस्थापक स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे जिन्होंने अंग्रेजों के खलाफ 1857 के वद्रोह का नेतृत्व कया था। गोरिल्ला युद्ध के अग्रदूत होने के नाते उन्होंने मध्य प्रदेश के शवपुरी क्षेत्र में वद्रोह का नेतृत्व कया। मान संह के वश्वासघात के कारण उन्हें कारावास हुआ। 18 अप्रैल, 1859 को शवपुरी में एक वशाल जनसमूह इकट्ठा हुआ था जहाँ अंग्रेजों ने उन्हें मृत्युदंड दिया था।
- ठाकुर रणमत संह - ये सतना के रहने वाले हैं। उन्होंने अंग्रेजों के खलाफ नगुआद क्षेत्र के चत्रकूट में 1857 के वद्रोह का नेतृत्व कया। उसने मेजर कॉ लन को मार डाला और उसे मृत्युदंड दिया गया।

निष्कर्ष – यद्य प यह वद्रोह असफल रहा फर भी इसने अंग्रेजों पर दीर्घकालीन प्रभाव छोड़ा। कई इतिहासकारों ने इसे सपाही वद्रोह का नाम दिया जब क कई इसे स्वतंत्रता के लए पहला वद्रोह कहना पसंद करते हैं। असफलता का मुख्य कारण एक सामान्य लक्ष्य/उद्देश्य नहीं होना था। कुछ स्वतंत्रता सेनानियों ने करों के खलाफ वद्रोह कया, कुछ शोषण के खलाफ, और कुछ चूक के सद्धांत के खलाफ आदि ले कन इस वद्रोह ने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बीच एकता का सार प्रद र्शत कया।

नाम	स्थान	नाम	स्थान
मुराद अली खान	महू छावनी	राजा बख्तावर संह	अमझेरा (धार)
ठाकुर दौलत संह	होशंगाबाद	देशपत बुंदेला	छतरपुर
शेख रमजान	सागर	दौलत कछवाहा	दमोह
शुजात खा	भोपाल	बहादुर और देवी संह	मंडल

सुरेंद्र भाई	संबलपुर	झलकारी बाई	ग्वा लयर
कशोर संह	हिंडोरिया, दमोह	सरदार खान	इंदौर
वजय संह लोधी	रामगढ़	दलगंजन संह	बड़ौदा (शहडोल)
हारोल हरचंद्रराय	रीवा	ठाकुर जगमोहन संह	रीवा
दौलत संह	रघुगढ़ (देवास)।	रंजीतराय दी क्षत	रेवांचल
महादेव शास्त्री	ग्वा लयर	राव खल्क संह दौआ	सेवढ़ा (दतिया)
उमराव संह सूबेदार	भांडेर (दतिया)	वारिश मो. खा	भोपाल
दौलत संह कुशवाहा	दबोह (भंड)	मेहरबन संह लोधी	हीरापुर (नर संहपुर)
गरल संह	सोहागपुर (शहडोल)	गरुण संह	सोहागपुर (शहडोल)

मध्य प्रदेश में स्वदेशी आंदोलन –

सेंट्रल प्रो वं शयल एसो सएशन का दूसरा अ धवेशन जबलपुर में हुआ। अध्यक्षता गंगाधर राव चटनवीस ने की। सशस्त्र वद्रोह के उद्देश्य से चदंबरम पल्लई ने एक वद्रोही संगठन बनाया। 1907 में, नागपुर से माधव राव सप्रे ने केशरी और हिंद केशरी समाचार पत्र प्रका शत कया, जो राष्ट्रीय स्तर पर स्वदेश और बहिष्कार आंदोलन के बारे में मध्य प्रांत में जनता को जागरूक करता है।

मार्च, 1907 में आर.एन. माधोलकर ने रायपुर में सेंट्रल प्रो वं शयल एसो सएशन के तीसरे सत्र की अध्यक्षता की। इस अ धवेशन में हरि संह गौर भी शा मल हुए।

मध्य प्रदेश में होम रूल लीग आंदोलन –

बाल गंगाधर तिलक और अन्नी बेसेंट ने स्वशासन और स्वतंत्रता के उद्देश्य से इस आंदोलन का नेतृत्व कया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

नवंबर, 1916 में, डॉ. हरि संह गौर ने सी.पी. में अ धवेशन की अध्यक्षता की। बरार और अनौपचारिक रूप से स्वराज की मांग की घोषणा की। उसी वर्ष मध्य भारत की होम रूल लीग की स्थापना जबलपुर में हुई जिसका मुख्यालय नागपुर में था।

मध्य भारत के नेताओं की होम रूल लीग –

- हरि संह गौर
- गंगाधर राव
- दादा साहब खापर्डे
- माधव राव सप्रे
- बी.एन. मुंजा

मध्य प्रदेश में खलाफत आंदोलन –

1919-20 में इस राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत हुई, मध्य प्रदेश में इसका नेतृत्व दुदीलाल जाटव और अब्दुल गफ्फार ने कया। भोपाल में इसका नेतृत्व अम्मन बाई, सैयद हा मद हुसैन रिजवी और शंभु दयाल ने कया था।

वहीं अजमल खा ने नगर निगम भवन जबलपुर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

कसाईखाना आंदोलन –

1920 में ग्राम सागर के रतौना में कसाईखाना संस्था की स्थापना हुई।

मध्य प्रदेश में असहयोग आंदोलन –

यह अहिंसा नीति पर आधारित एक शांतिपूर्ण आंदोलन था। आंदोलन की शुरुआत 1 अगस्त 1920 को गांधी जी ने की थी।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

कारण –

- अंग्रेजों के अत्याचार
- उजागर आ र्थक नीतियां
- भ्रष्टाचार, बांटो और राज करो
- रियासतों के आंतरिक मामलों में ब्रिटिश भागीदारी
- प्रथम वश्व युद्ध के बाद अंग्रेजों द्वारा कए गए वादों को पूरा न करना।
- रोलेट एक्ट का कार्यान्वयन
- ज लयांवाला बाग नरसंहार

असहयोग आंदोलन में सांसद का योगदान –

मध्य भारत में इस आंदोलन का मुख्य केंद्र नागपुर था। प्रमुख नेता थे –

- सेठ गो वंद दास
- सुंदर लाल तपस्वी
- कैलाश नाथ काटजू
- माखनलाल चतुर्वेदी
- सुभद्रा कुमारी चौहान
- कांचेदी लाल
- द्वारका प्रसाद मश्र
- सुखनंदन शर्मा
- बालकृष्ण शर्मा नवीन
- लक्ष्मण संह चौहान

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

मध्य प्रदेश में कार्रवाई का क्रम –

6 जनवरी, 1921 को गांधी जी ने जनता को इकट्ठा करने के लए भारत भ्रमण का आह्वान कया। यह यात्रा छिंदवाड़ा से शुरू होती है।

प्रभाकर दुंडीराज ने असहयोग आंदोलन में मध्य प्रदेश का नेतृत्व कया। गांधी जी खंडवा होते हुए जबलपुर पहुंचे, जहां उन्होंने सेठ गो वंद दास से मुलाकात की और गोलबाजार में एक सभा को संबो धत कया।

जबलपुर में महिलाओं ने वदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कया, शराब की दुकानों पर प्रतिबंध लगाया और खादी के कपड़ों को बढ़ावा दिया।

नाथूराम मोदी, लक्ष्मण संह चौहान ने कारण का समर्थन करने के लए अपनी वकालत छोड़ दी।

1921 में प्रंस ऑफ वेल्स ने रतलाम का दौरा कया जहां उनका बहिष्कार कया गया।

आर्यचंद्र जुगदान, श्रद्धानंद महाराज और शक्षक लालचंद्र को छह महीने के लए गरफ्तार कर लया गया।

स्वामी आत्मानन्द और श्रद्धानन्द ने सीहोर में आन्दोलन का नेतृत्व कया।

बालकृष्ण शर्मा नवीन शाजापुर में आंदोलन का चेहरा थे।

सतंबर, 1921 में गांधी जी भोपाल पहुंचे, जहां अम्मन बाई, शंभू दयाल खुमान, नजमा दद्दा, हा कम फैयाज हुसैन, हा मद हुसैन रिजवी ने उनका साथ दिया।

बघेलखंड में अवधेश प्रताप संह, यज्ञेंद्र संह, नर्मदा संह, राजभान संह, लाल बलदेव संह ने आंदोलन का नेतृत्व कया.

बुन्देलखण्ड में होम रूल के सभी केन्द्रों ने असहयोग आन्दोलन में भाग लया।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

सागर में राघवेंद्र संह ने क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी की बैठक की अध्यक्षता की.

ग्वा लयर में, कमलाबाई यादव, जानकी देवी अग्रवाल, चंपा देवी यादव ने ग्वा लयर रियासत के समर्थन के साथ वद्रोह का नेतृत्व कया।

नीमच में नथमल चौर ड़या, मूलचंद्र अग्रवाल ने वद्रोह का नेतृत्व कया।

5 फरवरी, 1922 को चौरा-चौरी की घटना के बाद गांधी जी ने असहयोग आंदोलन कया।

निष्कर्ष – यह एक बहुत ही मजबूत आंदोलन था जो अगर इसे वापस नहीं लया जाता तो आजादी का रास्ता बदल सकता था। इस आंदोलन में भारी जनसमूह का समर्थन और शांतिपूर्ण संदर्भ में वदेशी वस्तुओं और अन्य सभी चीजों का बहिष्कार देखा गया। अंग्रेजों को इस आन्दोलन को रोकने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। वे वरोध के इस तरीके से नाराज थे।

झंडा सत्याग्रह/झंडा सत्याग्रह

दिनांक – 8 मार्च, 1923

इसे जबलपुर सत्याग्रह भी कहा जाता है। यह एक अ भयान है जो ध्वज फहराने के अ धकार और स्वतंत्रता का प्रयोग करने पर केंद्रित है। यह आंदोलन 1923 में जबलपुर से शुरू हुआ था। जबलपुर नगर निगम में कांग्रेस को बहुमत मला और उन्होंने यूनियन जैक को फ्लैग डाउन करके भारत का चरखा झंडा फहराया। ब्रिटिश अ धकारियों ने झंडा फहराया और हमारे झंडे का अपमान कया।

तब राज्य के हर हिस्से में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया और जबलपुर के टाउन हॉल में सरोजिनी नायडू और मौलाना आज़ाद ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

सुंदरलाल तपस्वी, नरहरि अग्रवाल, नाथूराम मोदी, लक्ष्मण संह चौहान, सुभद्रा कुमारी चौहान जबलपुर में इस सत्याग्रह का चेहरा थे।

बाद में यह घटना राष्ट्रीय स्तर पर सुनाई दी और सरदार पटेल ने झंडा सत्याग्रह को राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का फैसला कया। इस बार सत्याग्रह 13 अप्रैल 1923 को राजेंद्र प्रसाद, सरोजिनी नायडू, वठ्ठल भाई पटेल आदि के साथ सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में नागपुर से शुरू हुआ।

यह सत्याग्रह तब समाप्त हुआ जब ब्रिटिश सरकार ने 18 अगस्त, 1923 को भारतीय ध्वज के साथ सत्याग्रही के जुलूस की अनुमति दी।

मप्र में स वनय अवज्ञा आंदोलन

6 अप्रैल 1930 को, गांधी जी ने नमक कानून तोड़ने के लए दांडी की ओर कूच कया और इस स वनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत हुई।

7 अप्रैल 1930 को मध्य प्रदेश के बरेला, जबलपुर में इस आन्दोलन की शुरुआत हुई। सेठ गो वंद दास, द्वारिका प्रसाद मश्र, गयाचरण त्रिवेदी, सवाईमल जैन, सुभद्रा कुमारी चौहान, लक्ष्मण चौहान, पं. र वशंकर शुक्ला, वी.पी. मश्रा मध्य प्रदेश में स वनय अवज्ञा आंदोलन का चेहरा थे।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

कार्रवाई के दौरान –

- सागर, दमोह, नर संहपुर, सीहोर, कटनी, मंडला के लोग शांतिपूर्वक कानूनों का उल्लंघन करने के लए एकत्र हुए थे। सागर में छात्रों ने अपनी पढ़ाई का बहिष्कार कया। कटनी स्थित गोदाम में हड़ताल थी।
- सेठ गो वन्द दास ने अपनी पुस्तक (भारत में अंग्रेजी राज्य) से जनता को जागरूक कया।
- पं. जवाहरलाल नेहरू को रायपुर में आयोजित केंद्रीय प्रांतीय सम्मेलन में गरफ्तार कया गया था।

- उसी समय महात्मा गांधी ने यवतमाल (मध्य प्रदेश और बरार) का दौरा कया और पुसंड के जंगल में उन्होंने ब्रिटिश कानून को तोड़ने के लए घास काट दी। इसी के साथ जंगल सत्याग्रह का चलन शुरू होता है।

नमक सत्याग्रह (6 अप्रैल 1930)

- इसे पं डत गो वंददास के नेतृत्व में नरई नाला जबलपुर में रानी दुर्गावती की समा ध से गांधी जी की तरह ही लॉन्च कया गया था।

अक्टूबर, **1930** में उमरिया में गुनघुटी जंगल सत्याग्रह हुआ।

तुरिया जंगल सत्याग्रह

दिनांक – 1930

स्थान- सवनी

कार्रवाई के दौरान -

9 अक्टूबर, 1930 को मूकप्रसाद ने अंग्रेजों के शासन के खलाफ सवनी के तुरिया गांव में चंदन की लकड़ी काटी।

दुर्गाशंकर मेहता ने इस वद्रोह का नेतृत्व तब कया जब उपायुक्त सेमन ने भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया।

गुड्डो बाई, रैना बाई, देमा बाई, बिरजू गोंड शहीद हो गए।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

जंगल सत्याग्रह/घोड़ा-डोंगरी सत्याग्रह

दिनांक – 1930

स्थान – बेतुल

कार्रवाई के दौरान -

यह बैतूल क्षेत्र के आदिवा सयों द्वारा अंग्रेजों के अतिक्रमण से अपनी भू म और जंगल की सुरक्षा के लए शुरू कया गया था। यह सत्याग्रह बैतूल के गोदा-डोंगरी गांव में हुआ था। इसका नेतृत्व बंजारी ढाल क्षेत्र के गंजन संह कोरकू ने कया। गंजन संह को गरफ्तार कर जंबाड़ा जेल भेज दिया गया, कोमा गोंड, रामू गोंड और मकरू गोंड शहीद हो गए।

5 मार्च, 1931 को गांधी-इर वन समझौते पर हस्ताक्षर और दूसरे गोलमेज सम्मेलन के साथ जंगल सत्याग्रह समाप्त हो गया।

सतंबर, **1930** में बेतवा नदी के तट पर लालाराम बाजपेयी ने ओरछा जंगल सत्याग्रह का नेतृत्व कया।

RAO'S ACADEMY for Competitiv (A unit of RAO

चरण पादुका संहार

दिनांक – 14th January, 1931

स्थान- चरण पादुका ग्राम, छतरपुर, उ र्मल नदी के तट पर।

कार्रवाई के दौरान -

सरजू दौआ के नेतृत्व में अंग्रेजों द्वारा कर के बढ़ते और जबरदस्ती संग्रह ने जन सभा का नेतृत्व कया।

मकर संक्रांति के प वत्र दिन लोग छतरपुर के चरण पादुका गांव में शांतिपूर्ण वरोध के लए एकत्र हुए थे, ले कन कर्नल फशर ने उन पर गो लयां चलाईं जिसमें कुछ लोग मारे गए और कई घायल हो गए।

सुंदरलाल बड़ौदा, धीरू कुर्मी, रामलाल कुर्मी, धरम दास और हलकाऊ अहीर शहीद हो गए। सूरज दौआ को चार साल की कैद हुई थी।

इस घटना को मध्य प्रदेश के ज लयांवाला बाग के नाम से जाना जाता है।

मध्य प्रदेश में भारत छोड़ो आंदोलन –

8 अगस्त 1942 को, गांधी जी ने बंबई में करो या मरो का आह्वान कया, इसके साथ भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ। मध्य प्रदेश में इस आन्दोलन की शुरुआत वदिशा से हुई थी।

कार्रवाई के दौरान -

जबलपुर में – 9 अगस्त, 1942 को फुहारेवाला चौक पर कई कांग्रेस नेताओं को गरफ्तार कर लया गया। नेताओं ने भूख हड़ताल की।

पं. र वशंकर शुक्ल, सेठ गो वन्द दास, द्वारका प्रसाद मश्र, भागवत चरण मंडलोई यहाँ के इस आन्दोलन के मुख थे।

11 अगस्त 1942 को जनसभा बुलाई गई जिस पर पु लस ने लाठीचार्ज कया।

14 अगस्त को जबलपुर में रीवा के गुलाब संह की पु लस फायरिंग में मौत हो गई थी.

बैतूल में – 12 अगस्त को पट्टन बाजार में खादी के कपड़ों को लेकर ब्रिटिश कपड़ों का बहिष्कार कया गया। इससे पु लसकर्मी ने फायरिंग कर दी जिसमें महादेव तेली शहीद हो गए।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams

19 अगस्त को घोड़ा-डोंगरी में आदिवासी लोगों ने इस आंदोलन में भाग लया।

मंडला में – 15 अगस्त, 1942 को मन्नूलाल मोदी, मधुर प्रसाद यादव ने एक जुलूस निकाला जिसमें पु लस ने गो लयां चलाईं। उदयचंद्र जैन शहीद हो गए।

मालवा में – मालवी सरवटे, जौहरी लाल झांझरिया, इंदु पाटकर, ज्ञान नारायण पोरानिक ने छात्रों के साथ स्कूल/कॉलेजों में वरोध प्रदर्शन कया।

मामा बालेश्वर दयाल ने रतलाम में अंग्रेजों का प्रतिकार कया।

साबूलाल जैन ने गढ़ाकोटा, सागर में आंदोलन का नेतृत्व कया।

भोपाल में प्रजामंडल के सदस्यों- वठ्ठलदास, शा कर अली खा और गो वंद प्रसाद श्रीवास्तव ने आंदोलन का नेतृत्व कया।

इंदौर में हेमू कलानी शहीद हो गए थे।

वदिशा में, श्रीमती। मदनदेवी और जमुनादेवी ने अंग्रेजों को चू ड़याँ भेंट कीं।

महाकौशल में सेठ गो वंददास, सुभद्रा कुमारी, के. काटजू, माखनलाल चतुर्वेदी और इंदरलाल शर्मा ने आंदोलन का नेतृत्व कया।

नेता	स्थान	शहादत
छोटेलाल पटेल	शाहडोल	-
-	रीवा	लाल पदमधर
भवानी प्रसाद मश्र	होशंगाबाद	
-	नर संहपुर	मंशाराम ताम्रकार, गौरीबाई जोशी
लीलाधर जोशी, बाबूराम सहाय, गोपी कृष्ण वजयवर्गीय	वदिशा	-

निष्कर्ष- स्पष्ट है क भारत छोड़ो आन्दोलन की आग मध्य भारत (म.प्र.) के प्रत्येक भाग में फैली हुई थी और चंगारी जितनी प्रबल थी उतनी ही राष्ट्रीय स्तर पर भी थी।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- गांधी जी ने वनोबा भावे के पावनार (नागपुर के पास महाराष्ट्र) आश्रम से देशवार व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत की।
- म.प्र. इसकी शुरुआत जबलपुर से हुई है।

नोट: (i) वनोबा भावे (वनायक नरहरि भावे, जन्म 1895 राजगढ़ जिला (महाराष्ट्र) व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में चुने जाने वाले पहले व्यक्ति थे, उसके बाद जवाहर लाल नेहरा थे।
(ii) स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम शहीद म.प्र. शहीद कुंवर चैन संह, नर संह (म.प्र.) 1824 हैं।

पंजाब मेल घटना –

दिनांक – 23-24 जुलाई, 1931

स्थान- खंडवा रेलवे स्टेशन

कार्रवाई के दौरान -

- पंजाब मेल दिल्ली से मुंबई जा रही थी, खंडवा रेलवे स्टेशन पर रुकी। ब्रिटिश अधिकारी हेक्सल मारा गया और मेजर शाहन स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा घायल हो गए।
- दिसंबर में यशवंत संह, देव नारायण तिवारी को मृत्युदंड और दलपत राव को आजीवन कारावास की सजा दी गई थी।

स्त्री सेवा दल

इस संगठन का गठन स्वामी ज्ञानानंद ने 1931 में रतलाम कांग्रेस कमेटी (1920) के तहत सामाजिक कार्य और स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से कया था।

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

अंजुमन-खुद्दाम-ए-वतन

दिनांक- 1933 - 34

इस संगठन का गठन मौलाना तर्जी खा, शा कर अली खान ने कया था। इसका अर्थ है (लीग ऑफ सर्वेंट्स ऑफ फादरलैंड)।

प्रजा मंडल

इस संगठन का गठन 1934 में झाबुआ में ब्रिटिश अत्याचारों के खलाफ, शराब पर प्रतिबंध लगाने, निचली जाति के लोगों के उत्थान आदि के लए कया गया था।

1936 में, कसानों और मजदूरों को एक साथ लाने के उद्देश्य से रतलाम में इसकी स्थापना की गई थी।

भोपाल राज्य हिन्दू सभा

इस संस्था का गठन 1934 में सामाजिक कार्य के उद्देश्य से कया गया था। इसके संस्थापक थे - मास्टर लाल संह, उद्धव राव मेहता और जमुना प्रसाद मुखरी।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

सोहाबल नरसंहार-

दिनांक – जुलाई, 1938

स्थान- हिनोता गांव, सतना।

कार्रवाई के दौरान -

ब्रिटिश अत्याचारों के खलाफ भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा एक बैठक की योजना बनाई गई थी। रास्ते में जब लोग माझन गांव पहुंचे तो पु लसकर्मी ने

फायरिंग शुरू कर दी. लालबुद्ध प्रताप संह, मंधीर पाण्डेय, रामश्रय गौतक शहीद हो गए।

इस नरसंहार को मझन शूटआउट कांड के नाम से भी जाना जाता है।

कांग्रेस का त्रिपुरी अ धवेशन –

Subhash announcing resignation

यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 52वां अ धवेशन था। 1938 में हरिपुर अ धवेशन सुभाषचन्द्र बोस ने अ धवेशन की अध्यक्षता की।

कार्रवाई के दौरान -

1939 में, सुभाषचंद्र बोस फर से गांधी जी द्वारा सम र्थत पट्टा भ सीतारमैय्या के खलाफ त्रिपुरी में होने वाले अगले सत्र की अध्यक्षता करने वाले दावेदार बन गए।

सुभाषचंद्र बोस बहुमत से चुने गए ले कन पट्टा भ सीतारमैय्या की हार से खुश नहीं गांधी जी ने आगे की वार्ता का बहिष्कार कया। सुभाषचंद्र बोस ने अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया और राजेंद्र प्रसाद कांग्रेस के नए अध्यक्ष बने।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

सराफा घटना –

दिनांक - 6 सतंबर 1942

स्थान- सराफा मार्केट, इंदौर

कार्रवाई के दौरान -

भारत छोड़ो आंदोलन के समर्थन में इंदौर के सराफा बाजार में एक शांतिपूर्ण जुलूस निकाला गया, जब पु लस ने भीड़ पर गो लयां चलाईं। मगनलाल ओसवाल शहीद हो गए।

रीवा का धान वद्रोह-

दिनांक - 28 फरवरी 1947

स्थान- बदावर ग्राम, रीवा

कार्रवाई के दौरान -

गाँव के लोग अंग्रेजों की जबरन मजदूरी नीति का वरोध कर रहे थे। वरोध कर रहे लोगों पर पु लस ने फायरिंग कर दी, जिसमें त्रिभुवन नारायण तिवारी और भैरव प्रसाद उरमा लया शहीद हो गए.

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

भोपाल के ज लयांवाला बाग की घटना –

तारीख – 14 जनवरी, 1949

स्थान - भोपाल रियासत के अंतर्गत बुरास गांव, रायसेन, नर्मदा नदी के कनारे

कार्रवाई के दौरान -

मकर संक्रांति के प वत्र दिन पर, सामूहिक रूप से इस घटना को मनाने के लए एकत्रित हुए और भारतीय ध्वज फहराया। भोपाल के नवाब के सेनापति जफर

अली खा ने भीड़ पर गो लयां चलाईं। बैजनाथ गुप्ता, छोटेलाल, वीरभान संह, मंगल संह, वशाल संह शहीद हो गए।

Freedom Fighters of Madhya Pradesh

रानी अवंतीबाई –

वह रामगढ़ की रानी थीं, जिन्हें रामगढ़ की झांसी की रानी के नाम से जाना जाता था और उन्हें मध्य प्रदेश की पहली शहीद महिला माना जाता था। उन्होंने रामगढ़ (वर्तमान डंडोरी) के वक्रमादित्य से शादी की।

उसने रामगढ़ की कमान संभाली ले कन ब्रिटिश नियुक्त अ धकारी सु मत अली की भागीदारी के कारण उसका प्रशासन प्रभा वत हुआ।

इसने हितों का टकराव पैदा कया और उसे युद्ध के मैदान में ले गया -

• खीरी का युद्ध

स्थान- मंडला

दिनांक – 19 नवम्बर, 1857

कैप्टन वे लंगटन को रानी अवंतीबाई ने हराया था।

• देवरागढ़ का युद्ध

दिनांक – 20 मार्च, 1858

YOUR SUCCESS OUR PRIORITY
RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

कैप्टन वे लंगटन ने रानी अवंतीबाई को हराया और उन्होंने आत्मसमर्पण करने के बजाय शहादत को चुना।

गरधारी बाई –

वह रानी अवंतीबाई की अंगरक्षक थीं। उसने अपनी रानी के साथ शहादत प्राप्त की।

रानी लक्ष्मी बाई -

for Competitive Exams

लोक प्रय नाम - झाँसी की रानी, भारतीय साहसी महिला

उनका पालतू नाम मनु/म णक र्णका था। उनका पालन-पोषण बाजीराव प्रथम के संरक्षण में हुआ। उन्होंने झांसी के शासक गंगाधर राव से ववाह कया। उनका एक बच्चा था जिसकी कम उम्र में ही मृत्यु हो गई थी इस लए उन्होंने दामोदर राव को उत्तरा धकारी के रूप में अपनाया ले कन यह चूक के सद्धांत की नीति के खलाफ था इस लए उन्होंने अंग्रेजों के खलाफ 1857 के वद्रोह में भाग लया।

18 जून 1858 को उन्होंने शहादत प्राप्त की। उनकी समा ध ग्वा लयर (फूलबाग) में है।

झलकारी बाई –

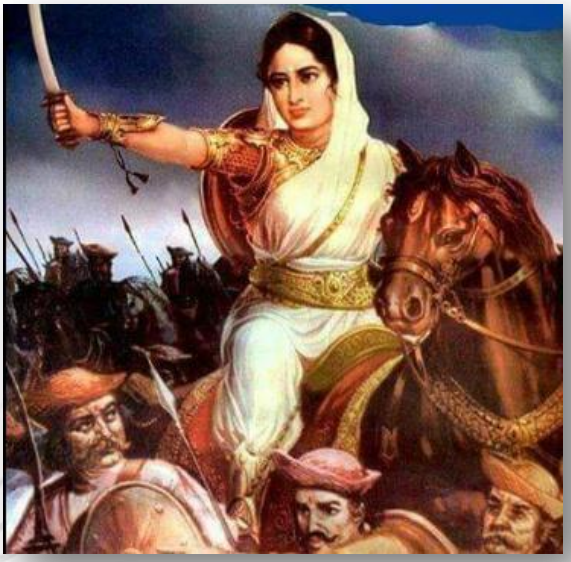

वह रानी लक्ष्मीबाई की अंगरक्षक थीं। उसने रानी को बचाने के लए अपने प्राणों की आहुति दे दी। ग्वा लयर में रानी लक्ष्मीबाई की समा ध के बगल में ही उनकी समा ध भी है।

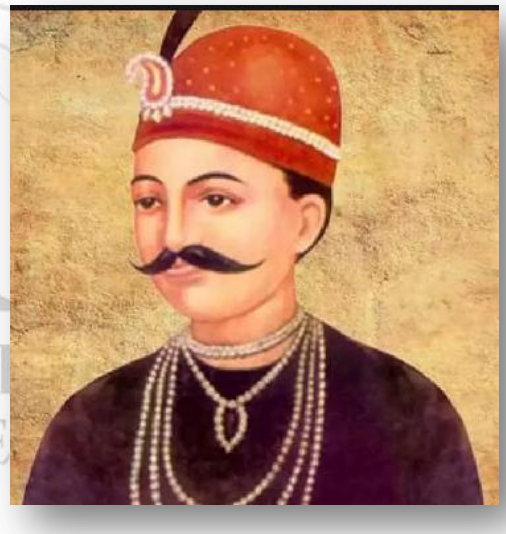

तात्या टोपे (राम चंद्र पांडुरंग राव)

उन्होंने टोपे का मतलब कमां डंग ऑ फसर की उपा ध धारण की। वह कानपुर में बसे पेशवा की सेना के सैन्य प्रमुख थे।

जब पेशवा नाना-साहेब को नेपाल से भागना पड़ा, तो तात्या टोपे अंग्रेजों के खलाफ सैन्य अ भयान के लए रानी लक्ष्मी बाई में शा मल हो गए।

- वे गा मनी काव कहे जाने वाले गोरिल्ला युद्ध शैली के वशेषज्ञ थे।

- तात्या टोपे को 18 अप्रैल 1859 को शवपुरी में फाँसी दी गई थी।

मधुकर शाह बुंदेला –

वह नरहुत के राजा थे, जिन्होंने बुंदेला वद्रोह में महत्वपूर्ण भू मका निभाई थी। सागर जिला अदालत के आदेश से उनकी जमीन जब्त कर ली गई, जिसके खलाफ उन्होंने वद्रोह शुरू कर दिया। मर्दन संह की सहायता से उन्हें अंग्रेजों ने पकड़ लया।

उनका मकबरा गोपालगंज सागर में है

जवाहर संह बुंदेला -

वह चंद्रपुर के राजा थे, 1842 में उन्होंने अपने भाई के साथ सागर जिला अदालत के फरमान पर बुंदेला वद्रोह शुरू कया। उन्होंने जून 1847 में है मल्टन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया जब उनके चाचा खेत संह ने जोर दिया।

राजा हृदय शाह -

वह हीरापुर (नर संहपुर) के राजा थे। वह राजा परी क्षत के साथ अंग्रेजों के खलाफ बुंदेला वद्रोह में चले गए। उनके भाई- गजराज संह, दीवान-इशरी संह, और रिश्तेदार- सावंत संह और बहादुर संह ने अंग्रेजों से संघर्ष कया और पु लस थानों को लूटा।

भक्तबली के वश्वासघात के कारण उसे पकड़ लया गया और मृत्युदंड दिया गया।

ढिल्लोंशान -

वह मदनपुरा के गोंड शासक थे, जिन्होंने 1842 के बुंदेला वद्रोह में भाग लया था। चावरपाठा के कई जमींदारों ने उनकी सहायता की, ले कन उन्हें भक्तबली ने धोखा दिया और कर्नल एली ने कब्जा कर लया।

बखतबली -

यह शाहगढ़ का शासक था। शुरुआत में उन्होंने 1842 के बुंदेला वद्रोह में हृदयशाह और ढिल्लोंशाह की जानकारी प्रदान करके अंग्रेजों की सहायता की।

अंग्रेजों द्वारा कए गए वादों को पूरा न करने के बाद, उन्होंने 1857 के वद्रोह में उनके खलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने बोधन दौआ और मर्दन संह की मदद से गडकोटा पर अ धकार कर लया।

जुलाई 1858 में उन्होंने ब्रिटिश अ धकारी थेरेस्टन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। सतंबर 1873 में उनकी मृत्यु हो गई

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams

बोधन दौआ- यह बखतबली का सेनापति था और बुंदेलखंड के मंगल पाण्डे के नाम से प्र सद्ध था।
गडकोटा पर अ धकार करने के दौरान उन्होंने भक्तबली की सहायता की और डाय को हराया।
रेहली के आयुक्त- लॉसन।
उन्हें बदनराय द्वारा धोखा दिया गया था, और उन्हें अप्रैल 1858 में मृत्युदंड दिया गया था

मर्दन संह –

वह बानपुरा के राजा मोर प्रहलाद के पुत्र थे। उन्होंने राजा भक्तबली की सहायता की। 1842 के बुंदेला वद्रोह में शुरू में अंग्रेजों का समर्थन कया।

उन्होंने मधुकर शाह को गोली मारने की जानकारी दी।

ले कन अंग्रेजों द्वारा वादे पूरे नहीं कए गए और 1857 के वद्रोह में उन्होंने उनके खलाफ लड़ाई लड़ी और भक्तबली, तात्या टोपे की सहायता की।

जुलाई 1878 में, उन्होंने मस्टर थेरस्टन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। जुलाई 1879 में उनकी मृत्यु हो गई।

कुँवर चैन संह –

वह नर संहगढ़ (राजगढ़) रियासत के आर्कड्यूक थे। उन्हें मध्य प्रदेश का पहला शहीद और एमपी का मंगल पांडेय माना जाता है।

उस पर मैडॉक द्वारा आनंदराम और रूपराम की हत्याओं का आरोप लगाया गया था और उसने चैन संह के सामने आत्मसमर्पण करने की शर्त भी रखी थी। -

- ब्रिटिश आ धपत्य को स्वीकार करना
- अफीम का व्यापार करना

उन्होंने नर संहगढ़ के ब्रिटिश राजनीतिक एजेंट - मैडॉक, चैन संह के आदेशों की अवहेलना करते हुए अपने अंगरक्षक हिम्मत खा और बहादुर खा के साथ सीहोर में मैडॉक के साथ युद्ध कया।

24 जून 1824 को दशहरा मैदान में उन्हें शहादत मली थी।

मध्य प्रदेश सरकार ने कुंवर चैन संह, सीहोर की छत्रछाया पर वर्ष 2015 से गार्ड ऑफ ऑनर शुरू कया है।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

भक्तावर संह –

वह धार के अमझेरा राज्य के शासक थे। वह निःसंतान थे और इस प्रकार उनका राज्य लॉर्ड डलहौजी के डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स के अंतर्गत आता है, इस प्रकार 1857 में उन्होंने अंग्रेजों के खलाफ लड़ाई लड़ी।

3 जुलाई को, उन्होंने भोपावर छावनी पर हमला कया, कप्तान है चसन दूर हो गए और उन्होंने एरेसनल पर अ धकार कर लया। बाद में अगस्त में, है चसन ने दीवान गुलाबराय, भवानी संह, मोहनलाल और चमनलाल- भक्तावर संह के मंत्रियों को पकड़ लया।

अक्टूबर में, उन्होंने MHOW छावनी पर सफलतापूर्वक हमला कया। जनरल क्लार्क भाग गया।

कुछ षड्यंत्रों के बाद, भक्तावर को अंग्रेजों ने पकड़ लया।

फरवरी 1858 में एमवाई अस्पताल परिसर में उन्हें मृत्युदंड दिया गया।

सआदत खा –

वह होलकर की सेना में गनमैन था।

1 जुलाई, 1857 को भागीरथ सलावट, वंश गोपाल, मौलवी अब्दुल समद और वारिस मोहम्मद खा के साथ सआदत खा ने इंदौर रेजीडेंसी में कड़ा प्रतिरोध कया। उन्होंने महू से मार्च का नेतृत्व कया ले कन इस वद्रोह को ब्रिगे डयर स्टुअर्ट ने दबा दिया। 1874 में, उन्हें बसवाड़ा से पकड़ लया गया और 1 अक्टूबर, 1874 को उन्हें मृत्युदंड दिया गया।

उनकी समा ध इंदौर में एमपीपीएससी कार्यालय के सामने स्थित है।

RAO'S ACADEMY
for Competitive Exams
(A unit of RACE)

चंद्रशेखर आजाद –

वह सबसे प्र सद्ध भारतीय स्वतंत्रता सेनानी में से एक थे, जिनका जन्म भाभरा, अलीराजपुर में हुआ था, जिसे अब चंद्रशेखर आज़ाद नगर के नाम से जाना जाता है।

REVOLVER BATTLE IN ALLAHABAD PARK

POLICE VS. ALLEGED REVOLUTIONARIES

Illicit Salt Making in Bombay.

No Insistence on Technicalities.

उनके अन्य लोक प्रय नाम - क्विक सल्वर, पं डतजी, बलराम आज़ाद, शेर-ए-हिंदुस्तान।

उन्होंने असहयोग आंदोलन में भाग लया।

9 अगस्त 1925 को, उन्होंने काकरोई ट्रेन एक्शन की योजना बनाई और उसे सफलतापूर्वक लागू कया, जिसमें उनके और उनके साथी स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा ह थयार और गोला-बारूद हा सल कए गए।

उन्होंने हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसो सएशन (एचआरए) 1928 की स्थापना की और हिंदुस्तान रिपब्लिकन सोश लस्ट एसो सएशन के सदस्य थे।

उन्होंने गुप्त रूप से अपना समय ओरछा में बिताया और स्वतंत्रता आंदोलनों के संबंध में आवश्यक जानकारी प्रदान की।

लाला लाजपत राय की मृत्यु के बाद उसने सांडर्स को मार डाला।

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams (A unit of RACE)

27 फरवरी 1931 को, उन्हें प्रयागराज के अल्फ्रेड पार्क में पकड़ लया गया, ले कन उन्होंने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया, उन्होंने शहादत का चुनाव कया और खुद को गोली मार ली।

स्वतंत्रता सेनानी	स्थान	योगदान
गुलाब संह	रीवा	उन्हें वंध्य-सपूत के नाम से जाना जाता था, उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लया था।
महादेवी तेली	बेतुल	भारत छोड़ो आंदोलन, बैतूल के पट्टन बाजार की घटना
सुजात खा	सीहोर	1857 का वद्रोह
आदिल मो. खान/फाजिल मो. खान	भोपाल	1857 का वद्रोह, बहोरी का युद्ध
नारायण दास खरे	टीकमगर्थ	भारत छोड़ो आंदोलन
लाल श्याम शाह	कटनी	एडेड ठाकुर रणमत संह
फरजंद अली	अजयगर्थ, पन्ना	1857 का वद्रोह
दीपचंद्र गोठी	बेतुल	गोधा-डोंगरी जंगल सत्याग्रह
भाई अब्दुल गनी	खुरई, सागर	असहयोग आंदोलन, रातोना सत्याग्रह, झंडा सत्याग्रह,

for Competitive Exams

राष्ट्रीय आन्दोलन में मध्यप्रदेश के साहित्य का योगदान।	
भोपाल	सप्तहिक आवाज़, सुबह वतन
जबलपुर	लोकमत, सरस्वती वलास
हरदा	नया सुधा
इंदौर	प्रजामंडल पत्रिका
खंडवा	करमवीर, अंकुश, सुबोध संधु

महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। मप्र की कुछ महत्वपूर्ण महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं-	
रानी लक्ष्मी बाई	उन्होंने डलहौजी के हड़प के सद्धांत के खलाफ झांसी, ग्वा लयर और आस-पास के क्षेत्रों में 1857 के वद्रोह का झंडा बुलंद कया।
झलकारी बाई	वह झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई की एक कुशल सेनापति थीं, जो 1857 के वद्रोह में उनके साथ थीं।
रानी अवंती बाई	उन्होंने रामगढ़ क्षेत्र में 1857 के वद्रोह का नेतृत्व कया।
गरधारी बाई	वह 1857 के वद्रोह में रानी अवंती बाई के साथ थीं।
रानी फूलकुंवर संह	वह गोंड शासक शंकर शाह की पत्नी थीं। 1857 के वद्रोह में पत्नी की महत्वपूर्ण भू मका रही।
सुभद्रा कुमारी चौहान	वह एक प्र सद्ध कवयित्री और स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने असहयोग आंदोलन, झंडा सत्याग्रह और स वनय अवज्ञा में भाग लया। उनके राष्ट्रवादी साहित्य ने भी देशभक्ति के प्रसार में महत्वपूर्ण भू मका निभाई।
सहोदरा बाई राय	वह एक स्वतंत्रता सेनानी थीं, जो सागर की रहने वाली थीं। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन और गोवा मुक्ति आंदोलन में भाग लया।
श्रीमती दुर्गा देवी	उन्होंने 1931 में रतलाम में स्त्री सेवा दल की स्थापना की। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लया था।
कस्तूरी बाई उपाध्याय	वह प्र सद्ध क व और स्वतंत्रता सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी की बहन थीं। उन्होंने स वनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लया।
रैनाबाई, बाइमाबाई, गुड्डो बाई	वे 1930 के तुरिया जंगल सत्याग्रह के शहीद थे।
मप्र की कुछ अन्य महत्वपूर्ण महिला स्वतंत्रता सेनानी दुर्गा बाई जोशी, काशी देवी, इंदिरा तिवारी, फातिमा बेग, राधा बाई आदि थीं।	

RAO'S ACADEMY for Competitive Exams